जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -१० जून २०२५ **सम्पादक-बिजय कुमार जैन** पृष्ठ ४० मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं

हम सब जैन हैं

जन्म
४ जून १९५७
सियाना, राजस्थान
ज्येष्ठ सुदी ७ संवत २०१४

दीक्षा
२३ जून १९८०
द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १०
मोहनखेड़ा महातीर्थ
आचार्यदेवेश विद्याचंद सूरीश्वर जी
के कर कमलों द्वारा

देवलोक गमन
४ जून २०२१
मोहनखेड़ा तीर्थ, राजगढ़,
धार, मध्यप्रदेश

जैन एकता के महाप्रवर्तक आचार्य देवेश श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. के चरणों में कोटिशः नमन

पू. पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

पू. मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०१४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

Motivated By

द्वारा आयोजित

भारत के नायकों को हमारा प्रणाम
सम्मान उनका, जो हमारे समाज के नायक हैं

इसी भाव के साथ

युगांतर
Exhibition

Showcase Your Brand at Kolkata's Premium Lifestyle Exhibition

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक
अनुप जलोटा, मुंबई
मो. 9821069089

राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
दिलिप सेन, मुंबई
मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता
मो. 9874272916

पूर्वांचल उपसभापति
सुशीला पुगलिया, कोलकाता
मो. 8617203712

उपाध्यक्ष
कांता गगरानी, आगरा
मो. 9837888088

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

उत्तरांचल उप सभापति
पूरण डावर, आगरा
मो. 9837065440

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044 (770) 3827595

12th & 13th July 2025
Salt Lake,Royal Bengal Room, City Centre 1

For booking stalls contact
Nisha Laddha 9830224300
Varsha Mundhra 9874272916

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं
चरित्र
ज्ञान
सत्य
अहिंसा
अचौर्य
अपरिग्रह

जैन एकता

२७ जून

शंका समाधान के प्रेरक मुनिश्री प्रमाणसागर जी के
जन्म पर्व पर शुभकामनाएं

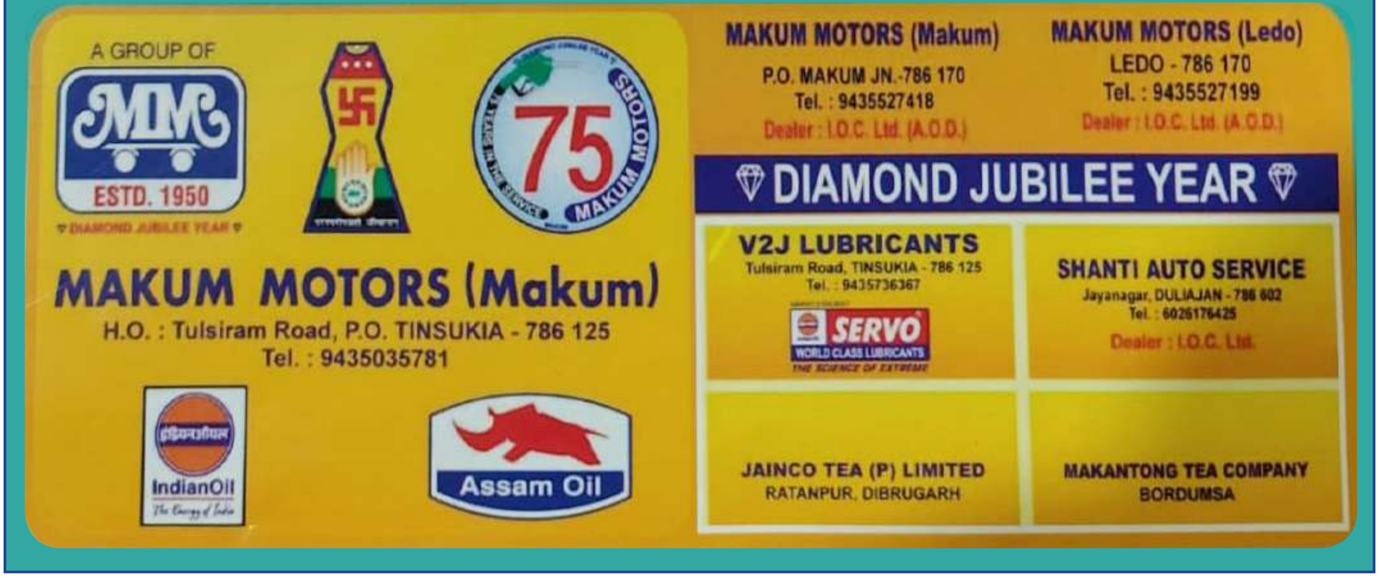
A GROUP OF
MM
ESTD. 1950
DIAMOND JUBILEE YEAR
75 MAKUM MOTORS

MAKUM MOTORS (Makum)
H.O. : Tulsiram Road, P.O. TINSUKIA - 786 125
Tel. : 9435035781

IndianOil
Assam Oil

MAKUM MOTORS (Makum)
P.O. MAKUM JN.-786 170
Tel. : 9435527418
Dealer : I.O.C. Ltd. (A.O.D.)

MAKUM MOTORS (Ledo)
LEDO - 786 170
Tel. : 9435527199
Dealer : I.O.C. Ltd. (A.O.D.)

DIAMOND JUBILEE YEAR

V2J LUBRICANTS
Tulsiram Road, TINSUKIA - 786 125
Tel. : 9435736367
SERVO WORLD CLASS LUBRICANTS

SHANTI AUTO SERVICE
Jayanagar, DULIAJAN - 786 602
Tel. : 6026176425
Dealer : I.O.C. Ltd.

JAINCO TEA (P) LIMITED
RATANPUR, DIBRUGARH

MAKANTONG TEA COMPANY
BORDUMSA

जय भिक्षु **जय महाश्रमण**

आचार्य तुलसी
महाप्रयाण २३ जून

Manghi Lal Singhi
+91 98292 13277

आचार्य महाप्रज्ञ
जन्म पर्व १४ जून

HOTEL
SiddharthResidency
AC Rooms, Banquet Halls
& Pure Veg Restaurant

📍 E-14, Nirman Nagar, Opp - Asopa
Hospital, Ajmer Road, Jaipur,
Rajasthan, India - 302019

🌐 www.hotelsiddharth.co.in

✉ hotelsiddharthresidency@gmail.com

☎ 0141 2810550

MEGHRAJ HOSPITAL
स्वास्थ्यं धनम् अस्ति

24x7 Emergency, 24x7 Pharmacy (OPD/IPD),
Diagnostic Centre, General Ward, Private &
Suite Room, MICU/NICU, Pre/Post Labour
Room, Modular Operation Theatre

📍 I-1, Amrapali Nagar, Vardhman
Marg, Gandhi Path West, Jaipur,
Rajasthan, India - 302021

🌐 www.meghrajhospital.com

✉ contact@meghrajhospital.com

☎ 0141 6769518 | +91 87643 30000

२८ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२७, अंक १०, जून २०२५

जिनागम

१२
अंकों का
वार्षिक मूल्य
रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मोः ९७०२२ ०५२५२

○ 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।

○ 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
☎ दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

'जैन एकता' का समागम है प्रस्तुत विशेषांक

'जिनागम' पत्रिका परिवार द्वारा आज से २८ वर्ष पहले 'जैन एकता' का नारा देकर विश्व में फैले जैन परिवारों से निवेदन किया था कि भले ही हम-सब विभिन्न पंथावलम्बी हैं पर हम सभी के दिलों में २४ तीर्थंकर ही आराध्य हैं, 'णमोकार मंत्र' का जाप ही हम सभी करते हैं।

२८ सालों के अंतराल में यह तो सभी ने मान भी लिया कि संगठन में अथाह शक्ति होती है, भले ही हम 'जैन' विभिन्न पंथावलम्बी हैं पर शिक्षित हैं, धर्म के प्रति गहरा लगाव है, साधु-संतों के प्रति श्रद्धा है, श्रद्धास्थल के जिर्णोद्धार के प्रति स्नेह है और ऐसी भावना के साथ जब 'जैन एकता' का भाव व आव्हान किया गया तो सभी को ऐसा लगा कि यह कैसे हो पायेगा? पर 'धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय', यह कहावत सच साबित हुयी और आज की युवा पिढ़ी कहने लगी छोड़ो 'दिगम्बर-श्वेताम्बर' पंथों की भावना, हम तो बस 'जैन' है, २४ तीर्थंकर के अनुयायी हैं। 'णमोकार मंत्र' हम सबका एक है, 'अहिंसा परमो धर्म' हमारा नारा है, 'जीयो और जीने दो' हमारा संदेश है, क्योंकि हम सब 'जैन' हैं। समय के अन्तराल में कई-कई साधु-संतों ने 'जैन एकता' के अभियान में अपनी मोहर भी लगाई, कई-कई कट्टरवादिता के द्योतक भी रहे, समयानुसार सभी में बदलाव भी आते रहे, इसी के बीच तेरापंथ के नवम आचार्य श्री तुलसी जी ने विश्वव्यापी अभियान छेड़ा, जिसके पथगामी दशम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी बने और आज तेरापंथ संप्रदाय के ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमण जी 'जैन एकता' के पथक बनकर श्वेताम्बर समाज में 'संवत्सरी' एक ही दिन मनाई जाए, प्रण लिया है।

दिगम्बर पंथ के कई मुनि-आचार्य ने 'जैन एकता' के पथ पर चल कर १८ दिनों का 'संवत्सरी-दशलक्षण' पर्व एकसाथ भी मनाया जयपुर में, जिसका श्रेय मुनिश्री तरुणसागर जी को जाता है।

हमारे सभी पंथों के साधु-संत जिन्हें मैं चलते-फिरते तीर्थंकर के रुप में मानता हूँ, उनके चरणों में विनंति करता हूँ, कि हम श्रावक-श्राविकाओं को आशीर्वाद प्रदान करें कि हमारे समाज में 'एकता' हो और हम विश्व को बता सकें कि हम-सब जैन हैं।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जैन एकता के प्रवर्तक आचार्य देवेश श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी

जैन धर्म परंपरा के प्रेरक
आचार्य ऋषभचंद सुरीश्वरजी

भारत अपनी अध्यात्म प्रधान संस्कृति से विश्रुत था, किन्तु आज इसने 'जगद्गुरु' होने की पहचान खोयी तो खोयी हुई पहचान को पुन: प्राप्त करने एवं अध्यात्म के तेजस्वी स्वरूप को पाने के लिये अनेक संत-मनीषी अपनी साधना, अपने त्याग, अपने कार्यक्रमों से प्रयासरत रहे हैं, ताकि जनता के मन में 'अध्यात्म' एवं धर्म के प्रति आकर्षण रह सके। अध्यात्म ही एक ऐसा तत्व है, जिसको उज्जीवित और पुनर्प्रतिष्ठित कर 'भारत' अपने खोए गौरव को पुन: प्रस्थापित रख सकता है, इस महनीय कार्य में एक थे ज्योतिष सम्राट के नाम से चर्चित मुनिप्रवर श्री ऋषभचन्द्र विजयजी, आप महान् तपोधनी, शांतमूर्ति, परोपकारी संत थे, जिन्होंने संसार की असारत का बोध बताया, संयम जीवन का सार समझाया एवं मानवता के उपवन को महकाया और 'जैन एकता' के अभियान को बुलंद किया।

मुनि श्री ऋषभचन्द्रजी का जन्म ज्येष्ठ सुदी ७, संवत २०१४ दिनांक ४ जून १९५७ को सियाना (राजस्थान) में हुआ, आपके पिता का नाम शा. श्री मगराजजी तथा माता का नाम श्रीमती रत्नावती था, बचपन का नाम मोहनकुमार था। आपकी माताश्री एवं भ्राता भी दीक्षित होकर संयममय जीवन जी रहे हैं एवं माता संयम जीवन में तपस्वीरत्ना श्री पीयूषलताश्री एवं भ्राता आचार्यदेवेश श्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी, आपकी दीक्षा द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १०, दिनांक २३ जून १९८०, श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ (म.प्र.) में आचार्यदेवेश श्री विद्याचंद्र सूरीश्वरजी 'पथिक' के करकमलों से हुई। आपने अपने गुरु से जैन दर्शन के साथ-साथ विशेषत: अध्ययन व्याकरण, न्याय, आगम, वास्तु, ज्योतिष, मंत्र विज्ञान, आयुर्वेद, शिल्प आदि का गहन अध्ययन किया, आपने ४० से अधिक पुस्तकें लिखी, जिसमें अभिधान राजेन्द्र कोष (हिन्दी संस्करण) प्रथम भाग, अध्यात्म का समाधान (तत्वज्ञान), धर्मपुत्र (दादा गुरुदेव का जीवन वृत्त), पुण्यपुरुष, सफलता के सूत्र (प्रवचन), सुनयना, बोलती शिलाएं, कहानी किस्मत की, देवताओं के देश में, चुभन (उपन्यास), सोचकर जिओ, अध्यात्म नीति वचन (निबंध) आदि मुख्य हैं।

मुनिश्री ऋषभचंद्रविजयजी का जन्म और जीवन दोनों विशिष्ट अर्हताओं से जुड़ा दर्शन रहा जिसे जब भी पढ़ेंगे, सुनेंगे, कहेंगे, लिखेंगे और समझेंगे तब यह प्रशस्ति नहीं, प्रेरणा और पूजा का मुकाम बना रहेगा, क्योंकि ऋषभचंद्र विजय जी किसी व्यक्ति का नाम नहीं, पद नहीं, उपाधि नहीं, अलंकरण भी नहीं, यह तो विनय और विवेक की समन्विति का आदर्श है, श्रद्धा और समर्पण की संस्कृति है, प्रज्ञा और पुरुषार्थ की प्रयोगशाला है, आशीष और अनुग्रह की फलश्रुति है, व्यक्तिगत निर्माण की रचनात्मक शैली है और अनुभूत सत्य की स्वस्थ प्रस्तुति है, यह वह सफर था, जिधर से भी गुजरता है उजाले बांटता हुआ आगे बढ़ता ही जाता है, कहा जा सकता है कि निर्माण की प्रक्रिया में इकाई का अस्तित्व जन्म से ही इनके भीतर था, शून्य जुड़ते गए और संख्या की समृद्ध अक्षय बनती गई।

ऋषभचंद्र विजयजी का अतीत सृजनशील सफर का साक्षी है, इसके हर पड़ाव पर शिशु-सी सहजता, युवा-सी तेजस्विता, प्रौढ़-सी विवेकशीलता और वृद्ध-सी अनुभवप्रवणता के पदचिन्ह हैं जो हमारे लिए सही दिशा में मील के पत्थर बनते हैं। आपकी तेजस्विता और तपस्विता की ऊंची मीनार, जिसकी बुनियाद में जीए गए अनुभूत सत्यों का इतिहास संकलित है, जो साक्षी है सतत अध्यवसाय और पुरुषार्थ की कर्मचेतना का, परिणाम है तर्क और बुद्धि की समन्वयात्मक ज्ञान चेतना का और उदाहरण है निष्ठा तथा निष्काम भाव चेतना का। आपकी करुणा में सह-अस्तित्व का भाव था, निष्पक्षता में सबके प्रति गहरा विश्वास है। न्याय प्रवणता में सूक्ष्म अन्वेषणा के साथ व्यक्ति की गलतियों के परिष्कार की मुख्य भूमिका, सापेक्ष चिंतन में अहं, आग्रह, विरोध और विवाद का अभाव, विकास की यात्रा में सबके अभ्युदय की अभीप्सा, उनकी मूल प्रवृत्ति में रचनात्मकता और जुझारूपन, आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जूझते रहे अपनों से भी, परायों से भी और कई बार खुद से भी, इस जुनून में आपने मान-अपमान की भी परवाह नहीं की, सिद्धांतों को साकार रूप देने की रचनात्मक प्रवृत्ति के कारण मुनियों के लिए ज्यादा करणीय माने जाने कार्यों की अपेक्षा जीवदया, मानव सेवा व तीर्थ विकास में रूचि ज्यादा परिलक्षित होती है। जीवदया व मानवसेवा के कई प्रकल्प आपने चला रखे थे। मन्दिरों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार के द्वारा न केवल जैन संस्कृति, बल्कि भारतीय संस्कृति सुदृढ़ करते रहे। गौरक्षा एवं गौसेवा के प्रेरक रहे। गौशालाओं के साथ-साथ गौ-कल्याण के अनेक उपक्रम संचालित करते रहे। संवेदना एवं संतुलित समाज रचना के संकल्प के चलते आपके 'मोहनखेड़ा तीर्थ' पर गरीब एवं आदिवासी बच्चों के लिए विद्यालय भी संचालित रखा, जहां आज सैकड़ों विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर रहे हैं। नेत्र,

शेष पृष्ठ १० पर...

NKRI
The Symbol of Quality
Since 1979
RUBBER SEALS

N.K. Rubber Industries

ISSO®
SINCE 1979

Automotive, Industrial & Domestic Rubber Components From **NKRI** Are Your Only Choice

Where Quality
is Our Lifeline

OUR PRODUCT RANGE

- O-rings
- U & V Seals
- Seals & Packings
- Automotive Rubber Parts
- Custom Molded Rubber Parts
- FEP Encapsulated O-Rings
- Washers
- Quad Rings
- Wiper Seals
- Backup Rings
- Coupling Rings
- Inflatable Seals
- Sealing Rings
- Grommets
- D-rings & X- rings
- Bonded Seals
- O-ring Kits
- Diaphragms
- Pads
- Hydraulic & Pneumatic Seals
- Piston Cups
- Filter Rings
- Extruded Profile & Gaskets
- Earth Moving Spare Parts

MATERIALS WE USE

- FFKM & FKM
- Hypalon®
- Nitrile (NBR)
- Aflas®
- Fluorosilicone
- Polyacrylate
- Nitrile / PVC Blended
- Silicone
- Neoprene®
- Polyurethane / Urethane
- HNBR
- EPDM
- P.T.F.E / Teflon

Welcome to N.K.Rubber Industries

N.K Rubber Industries (NKRI), originally established in Kolkata in 1979, shifted to Faridabad in 1995 with the same management.

Having been an **ISO-9001** certified company, it maintains all quality parameter offering high quality rubber components conforming to national and international standards which ensure :

1. High precision
2. Patient heat resistance
3. Good chemical stability
4. Long term durability

NKRI products provide good resistance to most of the gases, greases,chemicals, oils, fuels, water, abrasion, high and low temperature, etc.

N. K. Rubber Industries

E-38, Welcome Industrial Complex, Sanjay Colony, Sector-23, Faridabad-121005 Haryana (India)
Email: banthia@nkrubber.com | Website: www.nkrubber.com

Shri Noratan Mal Banthia

Date of Journey

(December 01, 1951 - March 14, 2025)

The life of Shri Noratan Mal Banthia was in many ways, exceptional. Throughout his life, he played many roles, a son, a husband, a father, a friend, and an entrepreneur, and in each of his roles, he excelled. His thinking was ahead of his time, motivating him to start importing rubber O-rings and seals in 1972. It was his deep sense of purpose and commitment to national progress that led him to set up his first production unit in Liluah, West Bengal on 17th April 1979; a step that fortified his position as a key contributor to India's rubber industry. His dream was simple - to make India self-reliant.

A firm believer in independence, he championed the "Import Substitute, Make in India" vision and introduced the ISSO brand, known for its quality, import substitute and durability. He had a philosophy, "build products that stand the test of time", a personal mantra he applied in his relationships as well.

Known for his integrity, simplicity, and lasting relationships, he quietly touched many lives, through business and beyond. Whether it's years from now or even decades, my father will forever be our North Star.

We will miss him every day. Thank you for everything, Papa.

Regards,
Aditya K. Banthia

पृष्ठ ७ से... विकलांगता, नशामुक्ति, कटे हुए (कुरूप) होंठ, कुष्ठ, मंदबुद्धि निवारण आदि के विशिष्ट सेवा प्रकल्प आपके नेतृत्व में संचालित होते रहे, अपने गुरु के हॉस्पिटल, गौशाला एवं गुरुकुल आदि के सपनों को आकार देने में जुटे रहते, आपने पांच करोड़ की लागत से श्री महावीर पवित्र सरोवर को निर्मित कर जनआवश्यकता की पूर्ति की, अलौकिक, अनुपम एवं विलक्षण जैन संस्कृति पार्क को निर्मित कर आपने अपनी मौलिक सोच का परिचय दिया, जगह-जगह मन्दिरों का निर्माण, तीर्थ यात्राएं निकालना, कार सेवा एवं तीर्थशुद्धि एवं स्वच्छता अभियान तीर्थों की स्थापना आदि अनेक अद्भुत एवं संस्कृति प्रभावना के कार्य आपने करवाए, आपमें निर्माण की वृत्ति व शक्ति भी थी। राजगढ़ का मानव सेवा हॉस्पिटल, मोहनखेड़ा का नेत्र चिकित्सालय, सहकारी सोसायटियां, अनेक मंदिर व गौशालाएं इसी वृत्ति व शक्ति का परिचायक है, आप कार्य के प्रति अपनी लगन को दूसरे में भी उतार देते और दूसरे ही पल उनकी शक्ति बन जाते थे।

मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी के बारे में लिखना मेरे लिये सौभाग्य का सूचक है, आपके उदार और व्यापक दृष्टिकोण का ही प्रभाव है कि आज किसी भी जाति, वर्ग, धर्म, समुदाय या संप्रदाय से जुड़ा व्यक्ति, वह चाहे प्रबुद्ध हो या अप्रबुद्ध आपके करीब आता, पूरे चाव से पढ़ता, सुनता और आपके कार्यक्रमों का सहभागी बन जाता। आपका व्यक्तित्व और कर्तृत्व इक्कीसवीं सदी के क्षितिज पर पूरी तरह छाया रहा। आपके प्रकल्पों, विचारों व प्रवचनों में कोरी आदर्शवादिता या सिद्धांतवादिता के दर्शन ही नहीं, प्रयोग सिद्ध वैज्ञानिक स्वरूप उपलब्ध होता था। अपने ज्ञान गर्भित प्रवचनों व साहित्य के माध्यम से आध्यात्मिक एवं नैतिक क्रांति का शंखनाद आपने किया, आप धर्म को रूढ़िया परंपरा के रूप में स्वीकार नहीं करते, धार्मिक आराधना-उपासना से व्यक्ति की जीवनशैली और वृत्तियों में बदलाव लाते थे, समग्र जीवनदर्शन का निचोड़ भी यही है, ऐसे महान् संत का एक आचार्य के रूप में पदाभिषेक होना एक शुभ भविष्य की आहट बनी।

विश्व-क्षितिज पर अशांति की काली छाया, रक्तपात, मारकाट की त्रासदी, मानवीय चेतना का दम घुट रहा है, कारण चाहे राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या धार्मिक, कश्मीर का आतंकवाद हो या सांप्रदायिक ज्वालामुखी, तलाक का मसला हो या राष्ट्रगीत गाये जाने पर आपत्ति, भारत को दो नामों से बोला जाना 'इंडिया व भारत', भारत की कोई भी राष्ट्रभाषा को घोषित ना होना, ऐसी ही अन्य दर्दनाक घटनाएं, हिंसा एवं संकीर्णता की पराकाष्ठा, आर्थिक असंतुलन, जातीय संघर्ष, मानसिक तनाव, छुआछूत आदि राष्ट्र की मुख्य समस्याएं मुंह बाए खड़ी थी, जन-मानस चाहता था, अंधेरों से रोशनी में प्रस्थान। अशांति में शांति की प्रतिष्ठा किंतु दिशा दर्शन कौन दे? यह अभाव-सा प्रतीत हो रहा था, ऐसी स्थिति में मुनि श्री ऋषभ का अहिंसक जीवन और विविध मानवतावादी उपक्रम ही वस्तुतः मानव-मानव के दिलो-दिमाग पर पड़े संत्रास के घावों पर मरहम का-सा चमत्कार करने की संभावनाओं को उजागर करते, आप आचार्य बनकर मानव को उन्नत जीवन की ओर अग्रसर करने का भगीरथ प्रयत्न किया।

मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी का व्यक्तित्व बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल और वाग्बल का विलक्षण समवाय है। दृढ़-इच्छाशक्ति, आग्नेय संकल्प, पुरुषार्थ और पराक्रम के द्वारा आपने उपलब्धियों के अनेक शिखर स्थापित किए, जो आप जैसे गरिमामय व्यक्तित्व ही कर सकते हैं। दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी के नेतृत्व में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं श्री मोहन खेड़ा महातीर्थ ने विकास की अलंघ्य ऊंचाइयों का स्पर्श किया, उसकी नाभि केंद्र में मुनि श्री ऋषभचन्द्र विजयजी ही रहे, आपने भारत की अध्यात्म विद्या और संस्कार-संपदा को पुनरुज्जीवित कर उसे जन-मानस में प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयत्न किया, ऐसे युग प्रणेता, युग निर्माता अध्यात्मनायक के आचार्य पर संपूर्ण जैन समाज गौरवान्वित होता रहा और होता रहेगा।

- बाबुलाल जैन, अहमदाबाद

नमो लोए सव्व साहूणं

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट)
श्री राजेन्द्र सूरि नोपाजी लखमाजी नेत्र चिकित्सालय

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर चरणों में कोटि - कोटि वंदन

To Achieve The Best Of
Health, Wealth, Prosperity, Fame, And Longivity

obtain advise and consultancy in, and correctons without any demolition best result oriented through following facts by

INTERNATIONALLY RENOWNED & AWARD WINNER
VISITED MANY COUNTRIES

Astro-vastu energy
Mahayantra energy
Astro-numero-colour chart
Meditation
Chanting mantra

For:

* Land * Plot * Home * Industries * Factories * Showrooms * Shops * Offices * Export Houses * Hotels * Restaurants * Hospitals * Pharmaceutical * Textiles * Agriculture Projects * School * Studios * Malls * Turnkey Mega Projects * Temples * Residential Projects * City Development * Uncompleted Projects For Revival Etc.

Contact

Rajendra Chopra (Jain)

Mob. : 9820224415 / 9320024415

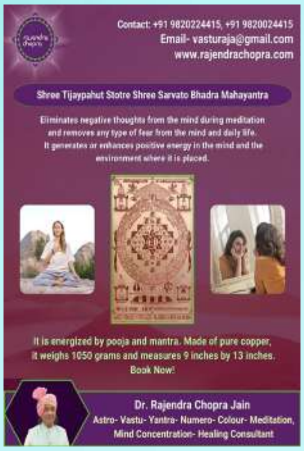

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Tijaypahut Stotre Shree Sarvato Bhadra Mahayantra

Eliminates negative thoughts from the mind during meditation and removes any type of fear from the mind and daily life. It generates or enhances positive energy in the mind and the environment where it is placed.

It is energized by pooja and mantra. Made of pure copper, it weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches. Book Now!

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

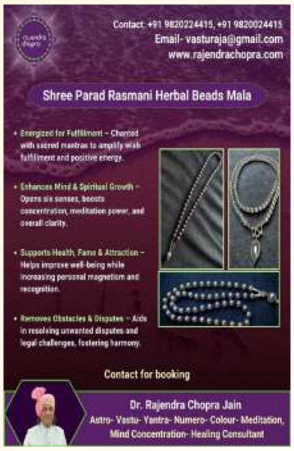

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Parad Rasmani Herbal Beads Mala

- Energized for Fulfillment – Chanted with sacred mantras to amplify wish fulfillment and positive energy.
- Enhances Mind & Spiritual Growth – Opens six senses, boosts concentration, meditation power, and overall clarity.
- Supports Health, Fame & Attraction – Helps improve well-being while increasing personal magnetism and recognition.
- Removes Obstacles & Disputes – Aids in resolving unwanted disputes and legal challenges, fostering harmony.

Contact for booking

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

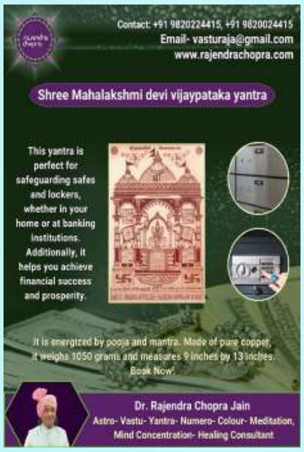

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Mahalakshmi devi vijaypataka yantra

This yantra is perfect for safeguarding safes and lockers, whether in your home or at banking institutions. Additionally, it helps you achieve financial success and prosperity.

It is energized by pooja and mantra. Made of pure copper, it weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches. Book Now!

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

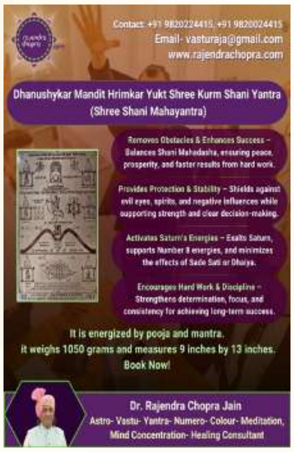

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Dhanushykar Mandit Hrimkar Yukt Shree Kurm Shani Yantra (Shree Shani Mahayantra)

Removes Obstacles & Enhances Success – Balances Shani Mahadasha, ensuring peace, prosperity, and faster results from hard work.

Provides Protection & Stability – Shields against evil eyes, spirits, and negative influences while supporting strength and clear decision-making.

Activates Saturn's Energies – Exalts Saturn, supports Number 8 energies, and minimizes the effects of Sade Sati or Dhaiya.

Encourages Hard Work & Discipline – Strengthens determination, focus, and consistency for achieving long-term success.

It is energized by pooja and mantra. It weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches. Book Now!

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

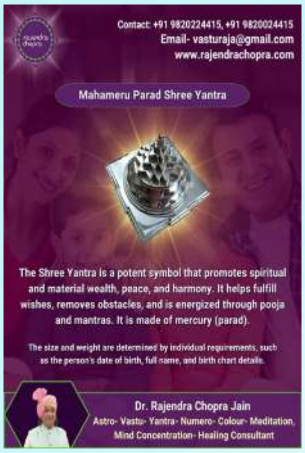

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Mahameru Parad Shree Yantra

The Shree Yantra is a potent symbol that promotes spiritual and material wealth, peace, and harmony. It helps fulfill wishes, removes obstacles, and is energized through pooja and mantras. It is made of mercury (parad).

The size and weight are determined by individual requirements, such as the person's date of birth, full name, and birth chart details.

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

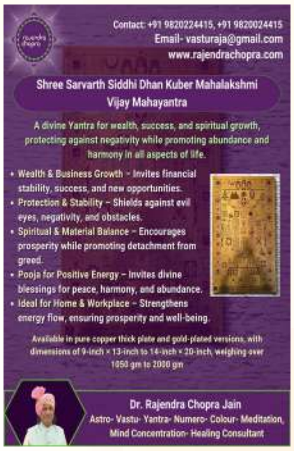

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Sarvarth Siddhi Dhan Kuber Mahalakshmi Vijay Mahayantra

A divine Yantra for wealth, success, and spiritual growth, protecting against negativity while promoting abundance and harmony in all aspects of life.

- Wealth & Business Growth – Invites financial stability, success, and new opportunities.
- Protection & Stability – Shields against evil eyes, negativity, and obstacles.
- Spiritual & Material Balance – Encourages prosperity while promoting detachment from greed.
- Pooja for Positive Energy – Invites divine blessings for peace, harmony, and abundance.
- Ideal for Home & Workplace – Strengthens energy flow, ensuring prosperity and well-being.

Available in pure copper thick plate and gold-plated versions, with dimensions of 9-inch × 13-inch to 14-inch × 20-inch, weighing over 1050 gm to 2000 gm

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

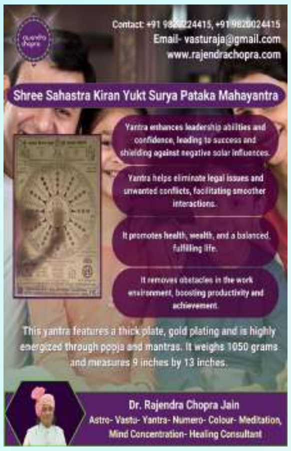

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Sahastra Kiran Yukt Surya Pataka Mahayantra

Yantra enhances leadership abilities and confidence, leading to success and shielding against negative solar influences.

Yantra helps eliminate legal issues and unwanted conflicts, facilitating smoother interactions.

It promotes health, wealth, and a balanced, fulfilling life.

It removes obstacles in the work environment, boosting productivity and achievement.

This yantra features a thick plate, gold plating and is highly energized through pooja and mantras. It weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches.

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

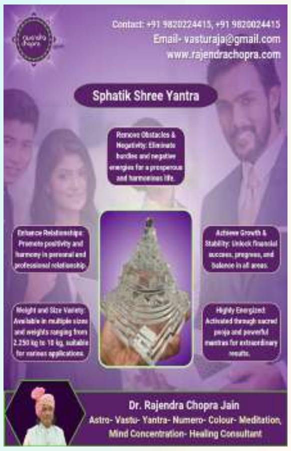

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Sphatik Shree Yantra

Remove Obstacles & Negativity: Eliminate burdles and negative energies for a prosperous and harmonious life.

Enhance Relationships: Promote positivity and harmony in personal and professional relationship.

Achieve Growth & Stability: Unlock financial success, progress, and balance in all areas.

Weight and Size Variety: Available in multiple sizes and weights ranging from 2.250 kg to 10 kg, suitable for various applications.

Highly Energized: Activated through sacred pooja and powerful mantras for extraordinary results.

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

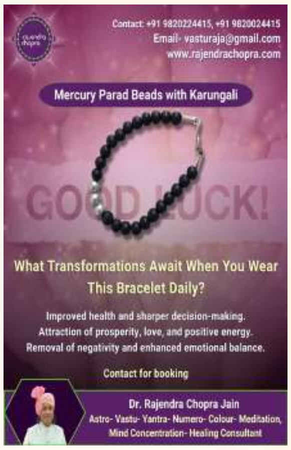

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Mercury Parad Beads with Karungali

What Transformations Await When You Wear This Bracelet Daily?

Improved health and sharper decision-making.
Attraction of prosperity, love, and positive energy.
Removal of negativity and enhanced emotional balance.

Contact for booking

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

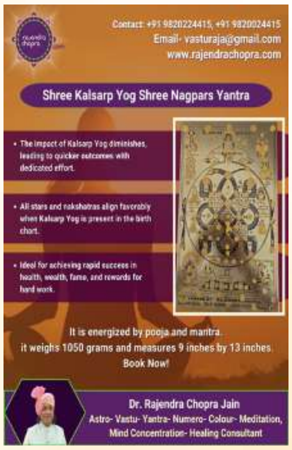

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Kalsarp Yog Shree Nagpars Yantra

- The impact of Kalsarp Yog diminishes, leading to quicker outcomes with dedicated effort.
- All stars and nakshatras align favorably when Kalsarp Yog is present in the birth chart.
- Ideal for achieving rapid success in health, wealth, fame, and rewards for hard work.

It is energized by pooja and mantra. it weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches. Book Now!

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

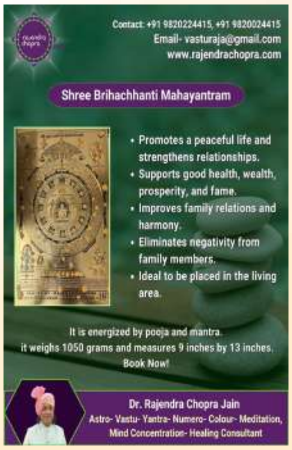

Contact: +91 9820224415, +91 9820024415
Email- vasturaja@gmail.com
www.rajendrachopra.com

Shree Brihachhanti Mahayantram

- Promotes a peaceful life and strengthens relationships.
- Supports good health, wealth, prosperity, and fame.
- Improves family relations and harmony.
- Eliminates negativity from family members.
- Ideal to be placed in the living area.

It is energized by pooja and mantra. it weighs 1050 grams and measures 9 inches by 13 inches. Book Now!

Dr. Rajendra Chopra Jain
Astro- Vastu- Yantra- Numero- Colour- Meditation, Mind Concentration- Healing Consultant

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

आचार्य श्री महाप्रज्ञ (१४ जून १९२० - ९ मई २०१०) जैन धर्म के श्वेताम्बर तेरापंथ संप्रदाय के दसवें आचार्य प्रमुख थे। महाप्रज्ञ जी एक संत, योगी, आध्यात्मिक नेता, दार्शनिक, लेखक, वक्ता और कवि थे, आपने मात्र दस साल की उम्र में एक जैन भिक्षु के रूप में धार्मिक प्रतिबिंब और विकास के अपने जीवन की शुरुआत की। महाप्रज्ञ जी ने १९४९ में अपने गुरु आचार्य तुलसी द्वारा शुरू किए गए 'अणुव्रत आंदोलन' में एक प्रमुख भूमिका निभाई और १९९५ में आंदोलन के स्वीकृत नेता बने। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने १९७० के दशक में सुव्यवस्थित 'प्रेक्षा ध्यान' प्रणाली तैयार की और 'साइंस ऑफ लिविंग' शिक्षा प्रणाली विकसित की, जो एक छात्र के संतुलित विकास और उसके चरित्र निर्माण के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण होता है।

आपने अपने आध्यात्म जीवन काल में १०,००० से अधिक गांवों को कवर करते हुए १,००,००० किमी से अधिक की पैदल यात्रा की और सद्भाव और शांति का संदेश फैलाते हुए जनता तक पहुंचे। आपने गुजरात के कच्छ जिले से कोलकाता और पंजाब से कन्याकुमारी तक भारत की लंबाई और चौड़ाई की यात्रा की। महाप्रज्ञ जी ने यह यात्रा आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में और बाद में स्वयं आचार्य होने के बाद की, इन यात्राओं के दौरान आपने हजारों जनसभाओं को संबोधित किया। अहिंसा के दूत, महाप्रज्ञ जी ने २००१ में 'अहिंसा यात्रा' आंदोलन शुरू किया, जो अहिंसा और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए २००९ तक जारी रहा।

प्रारंभिक जीवन

महाप्रज्ञ जी का जन्म राजस्थान के टमकोर के छोटे से गाँव में तोलाराम चोरड़िया और बालूजी के यहाँ हुआ था। आपके परिवार द्वारा आपको नथमल नाम दिया गया, महज ढाई महीने की उम्र में ही आपने अपने पिता को खो दिया था, यह एक विस्तृत परिवार था और उसे परिवार के सभी सदस्यों का समर्थन प्राप्त था। नथमल की माँ को बच्चे से बहुत लगाव था, सभी ने आपका पालन-पोषण का ध्यान भी रखा, उन दिनों 'टमकोर' गाँव में कोई औपचारिक स्कूल नहीं था और आपने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, फिर भी आपने स्थानीय शिक्षक (शिक्षकों) से अक्षरों और गणित की तालिकाओं का पाठ किया। नथमल की माँ धार्मिक महिला थी जिन्होंने अपना खाली समय आध्यात्मिकता में बिताती थी। आपको धार्मिक गीत भी सुनाती थी, जो छोटे बच्चे पर छाप छोड़ता है, मॉ की आध्यात्मिकता ने नथमल को भी प्रेरित किया। नथमल ने गाँव में आने वाले जैन भिक्षुओं से दर्शनशास्त्र का पाठ प्राप्त किया, आखिरकार नथमल ने अपनी मां को संन्यास में दीक्षित होने की अपनी इच्छा से अवगत कराया। २९ जनवरी १९३१ को आप दस वर्ष की आयु में साधु बन गए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आठवें आचार्य आचार्य कालुगणी ने आपको सरदारशहर, राजस्थान में भिक्षु बनने की दीक्षा दी, इससे नथमल 'मुनि नथमल' बन गए। आचार्य कालुगणी ने मुनि तुलसी की कक्षाओं के तहत मुनि नथमल की पढ़ाई की व्यवस्था की, नथमल ने मठ में जैन दर्शन के विभिन्न विषयों पर पाठ प्राप्त करना शुरू किया।

मुनि तुलसी के साथ, बच्चे के बौद्धिक विकास में तेजी आई और उसने हिंदी, संस्कृत, प्राकृत और राजस्थानी में हजारों उपदेश और छंदों को याद किया। मठ में उनकी शिक्षा में इतिहास, दर्शन, तर्कशास्त्र और व्याकरण शामिल थे, आपने जैन धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया, जैन आगमों के विद्वान और भारतीय और पश्चिमी दर्शन के आलोचक बने। २२ वर्ष की आयु में ही हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, और राजस्थानी भाषाओं और साहित्य में सक्षम बने। उद्धरण वांछित संस्कृत में आप एक विशेषज्ञ तात्कालिक या असाधारण कवि बने और बुद्धिजीवियों की कई सभाओं में इस कौशल का प्रदर्शन किया, आपने भौतिकी, जीव विज्ञान, आयुर्वेद, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का भी अध्ययन किया।

आध्यात्मिक प्रयास (१९४५-१९७८)

महाप्रज्ञ जी ने २ मार्च १९४९ को अपने गुरु और जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आचार्य तुलसी द्वारा शुरू किए गए 'अणुव्रत' आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आंदोलन का अंतिम उद्देश्य आत्म-रूपांतरित लोगों के एक विश्वव्यापी नेटवर्क की मदद से एक अहिंसक सामाजिक-राजनीतिक विश्व व्यवस्था बनाना है, 'अणुव्रत' की स्थापना के बाद लाखों लोगों को 'अणुव्रत' की सामग्री की व्यक्तिगत तैयारी में पवित्रता और आत्म-अनुशासन का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया और आंदोलन में एक मुख्य सदस्य के रूप में काम किया। कई बार 'अणुव्रत' के सिद्धांतों की व्याख्या करके आचार्य तुलसी का प्रतिनिधित्व भी किया।

आचार्य श्री तुलसी ने लगभग २१ वर्षों तक ग्रुप लीडर (अग्रगण्य) रहने के बाद १९६५ में हिसार, हरियाणा में तेरापंथ के सचिव (निकाय सचिव) के रूप में मुनि नथमल को नामित किया।

आगम अनुसंधान और संपादन

महाप्रज्ञ जी से परामर्श करने के बाद आचार्य तुलसी ने जैन आगमों का शोध, अनुवाद और व्याख्या शुरू करने का **शेष पृष्ठ १३ पर ...**

'जैन एकता' से ही होगा
जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Nirmal Jain
Mob. 9820183458

Aashish Jain
Mob. 9833050383

MAHESH WIRE-WELD INDUSTRIES PVT. LTD.

MFRS. OF: M.S., S.S. & G.I. WELDED MESH & WELDED-WIRE FABRICS

Plot No. 3&4, J.P. Udyog Nagar, (Near Railway Fly-over)
Manor Road, Dist. Palghar East,
Maharashtra, Bharat-401404
mail: maheshwireweld_palghar@yahoo.com

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व
बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

डॉ. रविन्द्र केवलचंद सेठिया
M.D. (Medicine)
मो. 9822055990

सेठिया क्लिनिक

Dr. Pratik Sethiya
Md (Medicine),
DM (Gastroenterologist) ESEGH, UK
Consultant Gastroenterologist,
Hepotologist & Therapeutic Endoscopist

Sethiya Gut And Liver Clinic

निता पार्क, गुंजन सिनेमाजवळ, एअरपोर्ट रोड,
येरवडा, पुणे, महाराष्ट्र, भारत-411006
फोन : 020-26613155, 26650619

पृष्ठ १२ से ... फैसला किया।

प्रेक्षा ध्यान प्रणाली का निर्माण

महाप्रज्ञ जी को ध्यान के चमत्कारों का एहसास होने लगा, वह आध्यात्मिक तकनीकों के साथ प्रयोग करने के लिए खुला था। आपने आचार्य तुलसी के साथ अपनी खोजों पर चर्चा की और उसके बाद महाप्रज्ञ ने ध्यान साधना के लिए अधिक समय देना शुरू कर दिया, ध्यान का गहन अभ्यास किया और विभिन्न तकनीकों के साथ प्रयोग किया। आपने जैन आगमों, प्राचीन शास्त्रों, योग विज्ञान, जीव विज्ञान, आधुनिक भौतिकी, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद आदि पर गहन शोध किया। २० वर्षों से अधिक के गहन अभ्यास के बाद, आपने सन १९७५ में 'प्रेक्षा ध्यान' प्रणाली तैयार की, आपने ध्यान प्रणाली को बहुत सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से तैयार किये, ध्यान प्रणाली के मूल पॉच पंखों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है - ध्यान, योगासन और प्राणायाम, मंत्र और चिकित्सा।

जीवन शिक्षा प्रणाली का विज्ञान

जीवन शिक्षा प्रणाली का विज्ञान मूल्य आधारित शिक्षा और नैतिक शिक्षा को लागू करने का एक प्रयास है, इसका लक्ष्य और दृष्टिकोण छात्र का समग्र विकास है न कि केवल बौद्धिक विकास। केवल बौद्धिक विकास छात्र के वास्तविक अनुभव और चरित्र के निर्माण में मदद नहीं कर सकता, इसका उद्देश्य संतुलित भावनात्मक, बौद्धिक और शारीरिक विकास करना है, यह केवल दर्शन की तुलना में व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक जोर देता है, मॉडल में योग, प्राणायाम, आसन, ध्यान, चिंतन तकनीक आदि शामिल हैं। जीवन विज्ञान की वैज्ञानिक तकनीक छात्र की भावनाओं को संतुलित करने में मदद करती है, यह शरीर में न्यूरो-एंडोक्राइन सिस्टम के संतुलित कामकाज में मदद करता है, यह भावनाओं के परिवर्तन, सकारात्मक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व के एकीकृत विकास के लिए काम करता है।

साइंस ऑफ लिविंग को छात्रों के भावनात्मक और समग्र विकास पर शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों से बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। प्रतिक्रिया में से कुछ को तनाव में कमी, अध्ययन में बेहतर दक्षता, बेहतर एकाग्रता और स्मृति, बेहतर क्रोध प्रबंधन आदि के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है।

आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी बने ५ फरवरी १९९५ को

मुनि नथमल (बाद में महाप्रज्ञ) से प्रभावित होकर, आचार्य तुलसी ने उन्हें १२ नवंबर १९७८ को महाप्रज्ञ (अत्यधिक ज्ञानी) के गुणात्मक विशेषण से सम्मानित किया।

४ फरवरी १९७९ को आपका 'महाप्रज्ञ' को आचार्य तुलसी द्वारा नाम में परिवर्तित कर दिया गया और 'युवाचार्य' भी बनाया **शेष पृष्ठ १४ पर...**

पृष्ठ १३ से ... गया, जो तत्कालीन आचार्य के उत्तराधिकारी थे, इस उन्नयन के साथ आपको युवाचार्य महाप्रज्ञ के रूप में जाना जाने लगा। एक युवाचार्य के रूप में महाप्रज्ञ जी संप्रदाय से संबंधित प्रमुख निर्णयों और गतिविधियों में आचार्य श्री तुलसी के करीबी सहयोगी बन गए।

१८ फरवरी १९९४ को एक सार्वजनिक सभा में आचार्य श्री तुलसी ने घोषणा की कि अब महाप्रज्ञ को 'आचार्य' की उपाधि भी प्राप्त होगी और वह इस पद को तत्काल त्याग रहे हैं, इसके बाद ५ फरवरी १९९५ को महाप्रज्ञ को औपचारिक रूप से दिल्ली में एक सार्वजनिक सभा में तेरापंथ धार्मिक व्यवस्था के १०वें आचार्य - सर्वोच्च प्रमुख के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। तेरापंथ में पदोन्नत होने के बाद, महाप्रज्ञ को कई जिम्मेदारियां मिलीं। अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान के आंदोलनों को और तेज करना अब उनकी प्राथमिक चिंता बन गयी, इन सभी आंदोलनों को और बढ़ावा देने और उनके महत्व को रेखांकित करने के लिए महाप्रज्ञ द्वारा एक विकास परिषद का गठन किया गया।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं, राजस्थान की स्थापना और स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसकी स्थापना १९९१ में आचार्य श्री तुलसी के आध्यात्मिक संरक्षण में हुई थी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने १९९५ से इस विश्वविद्यालय के प्रमुख के रूप में कार्य किया। विश्वविद्यालय का उद्देश्य सामान्य रूप से और विशेष रूप से जैन परंपरा में प्राचीन भारतीय परंपराओं में छिपे सत्य और मूल्यों को पुनर्जीवित करना है, यह विभिन्न विषयों में शोध करने और डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने के लिए मंच और बुनियादी ढांचा प्रदान करता है, इस विश्वविद्यालय का एक प्रमुख उद्देश्य अहिंसा और शांति, जैन धर्म, संस्कृत, प्राकृत, योग, ध्यान और साहित्य जैसे विषयों में साक्षरता का प्रसार करना है, वर्तमान में स्नातक और परास्नातक डिग्री के लिए नियमित डिग्री पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

जैन विश्व भारती
लाडनूं

अहिंसा यात्रा (२००१-२००९)

दुनिया की समस्याओं ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ को गहराई से छुआ, जवाब में 'अहिंसा यात्रा' के समाधान के साथ आए, अहिंसा के कारण को आगे बढ़ाने के लिए पैदल यात्रा, महाप्रज्ञ द्वारा ५ दिसंबर २००१ को राजस्थान के सुजानगढ़ में शुरू की गई। 'अहिंसा यात्रा' के साथ आचार्य श्री का मिशन लोगों को अहिंसा और उसके व्यापक दृष्टिकोण को प्रशिक्षित करना और फैलाना है, अहिंसा की अनंत शक्ति में एक नया विश्वास जगाने का प्रयास है, इसका उद्देश्य सभी प्रकार की हिंसा की समस्याओं को तीव्र ध्यान में लाना है, मिशन नकारात्मक विचारों/भावनाओं को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना है। अहिंसा प्रशिक्षण का आध्यात्मिक पहलू अहिंसा की चेतना को प्रज्वलित करना और अहिंसा के मूल्यों को विकसित करना है, इसका व्यावहारिक पहलू आजीविका के लिए रोजगार प्रशिक्षण है।

हिंसा से दूर रहने और निर्दोष प्राणियों को मारने से परहेज करने का संकल्प के लिए राजनीतिक नेता, सामाजिक कार्यकर्ता और आध्यात्मिक नेता सलाह के लिए उनके पास आए, आप अपनी यात्रा राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, दमन, मध्य प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों, पंजाब और चंडीगढ़ तक ले गए, भारत के ८७ जिलों से गुजरे और २४०० से अधिक गांवों, कस्बों और शहरों को कवर किया, जहां कई आध्यात्मिक और राजनीतिक नेताओं के साथ बैठकें कीं और सांप्रदायिक सद्भाव की अपील की। लगभग ४०,००० स्वयंसेवकों को उनके स्थानीय क्षेत्रों में विभिन्न जिम्मेदारियों के लिए सौंपा गया था, इस यात्रा ने किसानों और उन गांवों के आम और गरीब लोगों के सीधे संपर्क में आने की अनुमति दी, जहां वे गए थे। वे अपने मार्ग के सभी छोटे-छोटे गाँवों में रुके और खुली जनसभाएँ की, सार्वजनिक भाषण के माध्यम से, आचार्य श्री ने अहिंसा, बेरोजगारी उन्मूलन, नशीली दवाओं की लत, बुरी आदतों, सांप्रदायिक सद्भाव, स्वस्थ जीवन और सामंजस्यपूर्ण सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन से मुक्त जीवन जीने के व्यापक दृष्टिकोण पर जागरूकता पैदा की। नशीली दवाओं की लत, बेरोजगारी और तनाव से पीड़ित परिवारों के साथ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने के लिए अलग-अलग दिशाओं में

शेष पृष्ठ १५ पर ...

।। ॐ अर्हम् ।।
आचार्य भिक्षु वर्तमानाचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर
के चरणों में कोटि - कोटि वंदन
Parkash Jain
Mob.: 9811592113
Ashish Jain
Mob.: 9873823355
CASIO
PARKASH MARKETING
Auth. Distributor for Haryana, Punjab & Chandigarh : Casio Watches
#932, Sector-4, Gurgaon, Haryana, Bharat- 122001
Ph.: 9811592113
Email: parkash.marketing@gmail.com
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

!! ॐ अर्हम् !!
आचार्य भिक्षु जय महाप्रज्ञ आचार्य तुलसी
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि - कोटि वंदन!
Mansukh Dugar
Mob: 9810136731
Get your accounts systematic & according to Law
MSD & Company
Msd is a group of dedicated professionals with 30 years of on job experience in the field of account related services.
We at Msd are committed to take complete charge of your account vertical, including statutory/timely compliance of GST, INCOME TAX ,TDS etc.
Besides the regular account services, we also provide solution for pending account related issues, and merge the same with existing system.
Objective is to have seamless accessibility and ease of operation.
In nutshell, we are a one stop shop for your accounting needs.
Thanking you and assuring you of our keen desire to be of service to you
A- 776/2, 1st Floor, Near Jain Sthanak Mandir,
Shastri Nagar, Delhi- 110052
OFFICE:-+911146576290 +91 8800836732
Email: msdcompany01@gmail.com, mdpushpak@gmail.com

आचार्य भिक्षु जय महाप्रज्ञ आचार्य तुलसी
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि - कोटि वंदन
CAMBRIDGE EDUCATIONAL CITY
Dr. Saroj Chaudhary
Mob.: 9413193745
Cambridge Convent School
English and Hindi Medium (CBSE Board)
Cambridge Collage
Opposite Mahapragya Samadhi Sthal, Jaipur Road,
Sardarshahar, Churu, Rajasthan, Bharat-331403

पृष्ठ १४ से ... स्वयंसेवक फैल गए। 'अहिंसा यात्रा' ४ जनवरी २००९ को 'सुजानगढ़' में समाप्त हुई, उसी स्थान पर जहां से इसे शुरू किया गया था।

त्योहारों, बहु-धार्मिक परियोजनाओं, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार, स्कूलों में मूल्य आधारित शिक्षा को आत्मसात करने और धार्मिक/आध्यात्मिक प्रमुखों के बीच अंतरधार्मिक संवाद को प्रोत्साहित करने पर था, इन्हें निरंतर रूप से आगे बढ़ाने और सभी गतिविधियों के समन्वय के लिए धार्मिक/आध्यात्मिक नेताओं के साथ-साथ विद्वानों और प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा प्रबंधित एक राष्ट्रीय स्तर के स्वतंत्र और स्वायत्त संगठन की स्थापना की गई, इस संगठन का नाम 'फाउंडेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजियस एंड एनलाइटेड सिटिजनशिप' रखा गया, जिसे तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिन पर १५ जून २००४ को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में शुरू किया।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ पूज्य श्री

सूरत आध्यात्मिक घोषणा और अध्यक्ष डॉ. ए.पी. जे अब्दुल कलाम के विजन २०२० के उद्देश्यों को जोड़ती है और एक गैर-लाभकारी संगठन है जिसे १५ आध्यात्मिक नेताओं द्वारा स्थापित किया गया।

आध्यात्मिक अभ्यास ध्यान

महाप्रज्ञ स्वयं ध्यान के महान अभ्यासी रहे, आपने इन विषयों पर विस्तार से लिखा भी है, आपने संन्यास की दीक्षा के साथ मंत्र और ध्यान का अभ्यास करना शुरू कर दिया, आपने ध्यान की गहराई से जाना शुरू कर दिया और इसके लिए अपनी गहरी रुचि को महसूस किया। आप घंटों तक इसका अभ्यास करते थे, आपके ध्यान के अनुभव के परिणामस्वरूप प्रेक्षा ध्यान प्रणाली का निर्माण हुआ।

आपने प्रतिदिन मंत्र जाप का भी अभ्यास किया और इसके समृद्ध अनुभव के साथ मंत्र विशेषज्ञ बन गए, आपने कहा कि अपने अनुभवों से मंत्र का अभ्यास लोगों को उनकी छिपी शक्तियों को जगाने में मदद कर सकता है। महाप्रज्ञ जी खुद को स्वस्थ रखने के लिए योगासन, प्राणायाम का अभ्यास करते थे। महाप्रज्ञ जी ने शाम के समय तीन घंटे से अधिक समय तक मौन रहते थे, महाप्रज्ञ जी अपनी दैनिक गतिविधियों और अपने सभी गतिविधियों जैसे चलने, खाने आदि के दौरान बहुत सचेत रहते थे।

साधुता के अनुशासन

महाप्रज्ञ जी ने दस साल की उम्र में भिक्षु बनने की

शेष पृष्ठ १६ पर ...

पृष्ठ १५ से ... दीक्षा के एक भाग के रूप में पाँच प्रमुख प्रतिज्ञाएँ ली थी, ये महाव्रत अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य), चोरी न करने (अस्थेय), शुद्धता/ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य) और गैर-कब्जे/गैर-लगाव (अपरिग्रह) है। एक जैन मुनि (भिक्षु) के रूप में आपने पैदल ही यात्रा की क्योंकि जैन मुनि जब तक चलने में असमर्थ न हो तब तक किसी वाहन का उपयोग नहीं कर सकता, वह एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रह सकता, उसे लगातार स्थान बदलना पड़ता है और वह केवल मालिक की अनुमति से ही घर में जा सकता है। कपड़े और भिक्षा के लिए एक कटोरी जैसी कुछ बुनियादी वस्तुओं के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं होता।

प्रेक्षा ध्यानः

महाप्रज्ञ जी ने 'प्रेक्षा ध्यान' की रचना की और इस विषय पर विस्तार से लिखा, इन पुस्तकों में आपने ध्यान की विभिन्न तकनीकों और मानस, शरीर विज्ञान, हार्मोनल प्रभावों, अंतःस्रावी तंत्र और तंत्रिका तंत्र पर अनेक प्रभावों का वर्णन किया, अनेकान्तवाद, गैर-निरपेक्षता और सापेक्षता के दर्शन पर व्यापक कार्य किया। तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित इस दर्शन के अभ्यासी जो इस बात की पुष्टि करता है कि ऐसी कोई समस्या नहीं है, जिसे अनेकान्तवाद के प्रयोग से हल नहीं किया जा सकता, अनेकांत के साथ अपनी विचार प्रक्रिया को बेहतर बनाने और शांतिपूर्ण जीवन और सह-अस्तित्व के लिए इसका उपयोग करने के तरीके दिखाए, आपकी पुस्तक 'अनेकांत' द थर्ड आई दर्शनशास्त्र के विवरण पर चर्चा करती है। आपने जैन दर्शन पर कई पुस्तकें लिखी, जो कि जैन मान्यताओं और दृष्टि पर एक गंभीर सामग्री प्रदान करती हैं। जैन दर्शन मनन और मीमांसा इन रचनाओं में से एक है और एक शोध कार्य है जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ ने विस्तृत व्याख्या के माध्यम से जैन विश्वास प्रणाली के कई गहरे पहलुओं को विस्तृत किया। एक और सटीक काम जैन धर्म की दार्शनिक नींव है। श्रमण महावीर पर जीवनी कृति है। महाप्रज्ञ ने अपने अनुभव और ध्यान में उपलब्धियों के माध्यम से महावीर को चित्रित करने का प्रयास किया। संबोधि महावीर और राजकुमार-भिक्षु मेघा कुमार के बीच एक लयबद्ध संरक्षण है, जिसमें महावीर बाद में ज्ञान देते हैं। महाप्रज्ञ ने आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी के जीवन और दर्शन पर विस्तार से लिखा।

आचार्य श्री तुलसी से मिला आशीर्वाद

महाप्रज्ञ ने अपनी कविता के माध्यम से संस्कृत में बहुत बड़ा योगदान दिया, हिंदी में कविताएं और भजन भी लिखे, अश्रुविना, संस्कृत में मुकुलम और हिंदी में ऋषभयान उनकी कुछ काव्य रचनाएँ हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने बड़ी स्पष्टता से लिखा, उनके वाक्य छोटे होते हैं और उनकी शैली सीधी होती है, आपने केवल सुझाव दिया अपने विचार को अपनाने हेतु मजबूर नहीं किया, भले ही अपने विश्वास पर जोर दिया, भाषा अभिव्यक्ति में भी सापेक्षता के प्रति सचेत किया। आपने अक्सर निष्क्रिय आवाज का सहारा लिया, जैसा कि एक अनुवादक ने एक बार कहा था, आपके लेखन में 'एक पूर्ण विराम और अगले वाक्य के बीच, एक साम्राज्य का निर्माण किया जा सकता है'।

विचारों - धर्म पर खड़े रहो आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं :

'वह धर्म जो मनुष्य के जीवन में परिवर्तन नहीं लाता, जो उसे शांति प्रदान नहीं करता, उसे कंधों पर बोझ के रूप में ले जाने के बजाय गंगा नदी में फेंक दिया जाना चाहिए, केवल अनुष्ठान या मूर्ति पूजा तब तक पर्याप्त नहीं होती जब तक किसी का आचरण नहीं बदल जाता। धर्म केवल मंदिरों, मस्जिदों या चर्चों तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि मनुष्य के दैनिक जीवन तक भी विस्तृत रहे।'

'मैं उस धर्म में विश्वास करता हूं जिसकी नींव में नैतिक मूल्य हैं और आध्यात्मिकता अपने चरम पर है, मैं उस धर्म में विश्वास नहीं करता जिसमें नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता नहीं, मैंने उस धर्म को स्वीकार किया, जिसने मुझे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक रूप से स्वस्थ बनाया। धर्म कर्मकांडों से परे होता है, यदि आप शुद्ध धर्म में विश्वास करते हैं तो धर्म में हमारी समस्याओं को हल करने की क्षमता है।'

आचार्य महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण ९ मई २०१० को दोपहर २:५२ बजे (८९ वर्ष की आयु) चुरू जिले के 'सरदारशहर' में हुआ, जहाँ आपने भिक्षुता प्राप्त की थी, इसके बाद आचार्य महाश्रमण जी को जैन तेरापंथ का ११वां आचार्य चुना गया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आचार्य **शेष पृष्ठ १७ पर...**

।। ॐ अर्हम् ।।
श्री महाप्रज्ञ 'तेरापंथ' के थे भास्कर
जैन जगत सदा वंदन हे गणरत्नाकर!
आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्म पर्व पर
कोटि-कोटि वंदन

Umed Sushila Bokaria
Mob.: 9841026820

I -45 Annanagar East, 10th Street, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat -600102

।। ॐ अर्हम् ।।   ।।श्री गुरूवेनमः ।।
जय भिक्षु   जय महाश्रमण   जय तुलसी
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

Dr. V. S. Baid
(PULMONOLOGIST)
Mob. : 9831082034

CA Chanda Baid
Mob. : 9831533450

Dr. Mayank Baid
(Urologist)
Mob. : 9883212610

Dr. Ruchi Jain Baid
(Obs & Gynae)IVF Specialist
Mob. : 7877574734

Dr. Mahak Baid
(Orthopaedics)
Mob. : 9830508578

Dr. V S Baid's Chest & Allergy Clinic
Chamber : 36/2A, Ram Krishna Samadhi Road, Kankurgachi,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700054
lake District, 74 &74/1 Narkeldanga Main Road, Block-5,
Lobby-2, Flat- 9E & 10E, Kolkata, West Bengal, Bharat-700054

!! ॐ अर्हम् !!
गुरुवर आपका आशीर्वाद बना रहें
अहिंसा के महान प्रचारक
महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
लाखों बधाईयाँ
आचार्य महाप्रज्ञ जी

Rajesh Patawari
Mob: 9844155006

Rishav Patawari
Mob: 9844527901

Rishav Enterprises
Manufacturer of :
all kinds of BOPP Bags, Pouches and Sheets
38/4, Kurubarahalli Village,
Thaverekere Hobli, Bangalore South Taluk,
Bengaluru, Karnataka, Bharat- 562130

पृष्ठ १६ से ... श्री महाश्रमण को १९९७ में गंगाशहर (बीकानेर) में तेरापंथ संप्रदाय का युवाचार्य बनाया था।

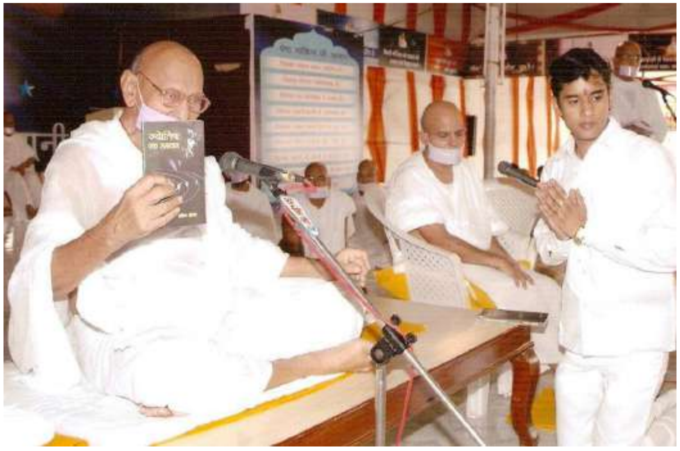

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखित पुस्तकें:

- परिवार और राष्ट्र
- ऋषभयान: पहले राजा की कहानी
- सम्बोधि
- सुख और दुख को समझना
- अपने आप को रूपांतरित करें
- खुद को बदलो: एक अस्थिर दुनिया में स्थिरता ढूँढना
- कर्मवादी
- यात्रा एक अकिंचन की
- मंत्र चिकित्सा
- न्यू मैन न्यू वर्ल्ड
- भक्तमार स्तोत्र: दिव्य हस्तक्षेप
- ध्यान क्यों करें
- सुखी और सामंजस्यपूर्ण परिवार
- शरीर और आत्मा
- प्रत्येक दिन के लिए सलाह
- मन के रहस्य
- भक्तांबर स्तोत्र
- तत्व-बोध
- अपने दिमाग को जगाएं
- प्रेक्षा ध्यान- दर्शन और अभ्यास
- मानसिक रंगों की प्रेक्षा ध्यान धारणा
- तेरापंथ जैन आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा साधना और सिद्धि
- जो सहता है वही रहता है
- जैन श्रावक कौन है
- विचारों को बदलना सिखें
- अध्यात्म की दुनिया में प्रवेश करें
- तब होता है ध्यान का जन्म
- सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र
- द सन विल राइज अगेन

ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ- साध्वी अणिमाश्री

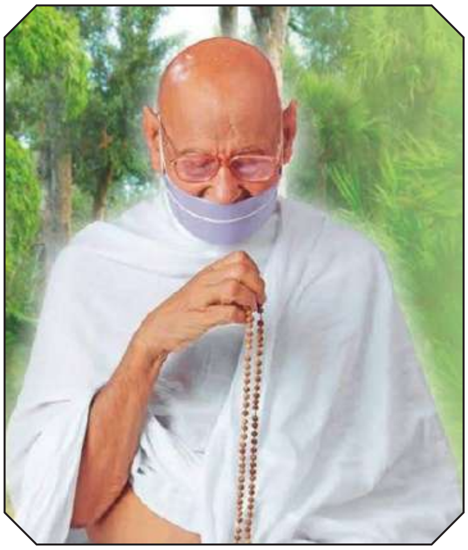

अन्तदृष्टि से सम्पन्न ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ इस शताब्दि के एक ऐसे महान अध्यात्मवादी दार्शनिक थे जिन्होंने अपनी अन्तप्रज्ञा से विश्व क्षितिज में अनेक नए स्वस्तिक उकेरे हैं, केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के अभ्युदय एवं उत्थान हेतु अनेक अवदान दिये हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी के कालजयी विचार श्रृंखला ने जीव जगत की एक अभिनव सुव्यवस्थित परिष्कृत एवं पारदर्शी जीवन जीने की एक अभिनव शैली दी है।

फोरी वैज्ञानिक पद्धति विश्व के लिए सिरदर्द बनती जा रही है एवं फोरा आध्यात्म विकास शुष्क सा दृष्टिगोचर हो रहा है। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को स्वामी विवेकानन्द ने तीव्रता से महसूस किया था। विनोबा भावे ने भी इसके समन्वय पर बल दिया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अपनी हंस मनीषा के बल पर इस दुरूह कार्य को संभव करके दिखा दिया। सरस्वती के इस वरदपुत्र ने अपने साहित्य में अध्यात्म और विज्ञान को एक साथ प्रतिपादन ही नहीं किया, बल्कि उन्हें एक दुसरे के समक्ष पूरक रूप में व्याख्यायित एवं प्रतिष्ठित किया। प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ जी के मतानुसार:

विज्ञान ने धर्म की आस्था को विखंडित ही नहीं किया बल्कि उसे प्राणवान भी किया है, धार्मिक क्षेत्र में यह एक सर्वधा नवीन विचार था, उनकी इस प्रस्थापना ने अध्यात्म जगत् को नये आयाम दिये हैं और अनेक अनुद्घाटित दिशाएं उद्घाटित हुई हैं।

केवल विचार ही नहीं व्यवहारिक धरातल पर उन्होंने प्रयोग भी दिये हैं। प्रेक्षा-ध्यान आचार्य महाप्रज्ञ का एक ऐसा अवदान है जिसे अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का कीर्ति स्तम्भ कहा जा सकता है।

अनेक व्यक्तियों ने इस प्रयोग को अपनाकर आत्मानंद का अनुभव किया है तथा मानसिक तनाव से छुटकारा पाया है। प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग से अध्यात्म का नव जीवन शुरू हुआ है, जन सयुदाय को एक नई दृष्टि मिली है।

वर्षों तक ध्यान के प्रयोग स्वयं पर किये, महीनों-महीनों तक एकान्तवास किया, ध्यान योग की प्रलभ साधना के बाद मानवजाति ने यह नवनीत आपश्री से प्राप्त किया है।

शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है- सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण:

इस उद्देश्य की पूर्ति की दृष्टि से शिक्षा पद्धति जो अधूरी रही है, यद्यपि हमारी शिक्षा पद्धति ने ऐसे अनेक कुशल डॉक्टर, इन्जिीनियर, वकील, न्यायाधीश, अफसर एवं प्रकाशक आदि दिये हैं जिन्होंने अपने प्रतिभा बल से पूरे विश्व में 'भारत' का गौरव बढाया है। शारीरिक एवं बौद्धिक विकास का पर्याप्त अवकाश हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में है किन्तु मानसिक एवं भावनात्मक विकास के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन-विज्ञान के रूप में शिक्षा का एक नया आयाम दिया, आज यह एक विज्ञान तथ्य बन गया है कि व्यक्ति के भाव एवं व्यवहार के लिए आंतरिक रसायन जिम्मेदार है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों के द्वारा अन्त:स्त्रावी ग्रन्थि तंत्र के रूप में रसायनों को संतुलित एवं संवर्धित किया जा सकता है, उन प्रयोगों से अनेक भावनात्मक समस्याओं को सीधा समाधान मिलता है। नियमित एवं दीर्घकालिक अभ्यास से स्वभाव आदि में भी विलक्षण परिवर्तन होता है। भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरूष, जन कल्याण के लिए सर्वात्पना समर्पित व्यक्तित्व आचार्य महाप्रज्ञ समग्र मानव जाति के अभ्युदय के लिए सतत चिंतनशील रहे, अहिंसा एवं शांति स्थापना हेतु उनके सानिध्य में चार अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रेंसेस हुई, जिसकी प्रतिक्रिया बहुत ही सुंदर एवं सार्थक रही। जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य महाप्रज्ञजी की जन्म पर्व के इस मंगल अवसर पर गण प्रांगण में श्रद्धा का समुन्दर लहरा रहा है, आस्था के अनमोल मोतियों से विराट व्यक्तित्व की अभिवंदना की जा रही है, आपश्री का विराट व्यक्तित्व अमाप्य है, बस आप द्वारा प्रदत्त साधना के सूत्र जीवन को सार्थकता दे, आपकी प्रज्ञा से नि:सृत आगम-व्याख्या की सोजस्विनी का प्रवाह युग-युग तक इस वसुन्धरा पर प्रवाहित होता रहे, समूची मानव-जाति आपके अमर अवदानों से अभ्युदय के पथ का वरण करें। जय भारत!

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

पूनमचंद सुराणा
मो. ९८३९०३७०११
कौशल सुराणा
मो. ८००९५२७२२४
ओसवाल टेन्ट प्रोडक्ट्स
हेड ऑफिस : १२७/२२, टी-ब्लाक, विनोबा नगर,
गोविन्द नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत-२०८०१४
ब्रांच ऑफिस : ७६-ए, बी. एम. मार्केट, परमपुरवा,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत-२०८०१४
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

With Best Compliments From

SHREE GOURI SHANKAR JUTE MILLS LIMITED.

Manufacturers Of
Quality Jute Products

Mills: Shyamnagar, 24-Parganas(N),
West Bengal, Bharat - 743127
Mob.: 9830971054

Head Office: 16-A, Brabourne Road,
5th Floor, Kolkata, Bharat-700 001
Ph.: 4021-8680

!! ॐ अर्हम् !!

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि - कोटि वंदन

Rajkumar Fulfagar Jain

Punam Palace, Below Athgaon Flyover, opp. Sani
Mandir, A.T.Road, Athgaon, Guwahati- 781001

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए, **INDIA** नहीं   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य भिक्षु   जय महाप्रज्ञ   आचार्य तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर
गुरुवर के चरणों में कोटि - कोटि वंदन

Sunil Singhi

Mob.: 9830322640

Singhi House, 513 B,
Block M New Alipore, Kolkata

।। ॐ अर्हम् ।।

गुरुवर आपका आशीर्वाद बना रहे

आचार्य भिक्षु   वर्तमानाचार्य महाश्रमण   आचार्य तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
चरणों में कोटि - कोटि वंदन

M. R. Sekhani
Mob.: 9339765482

PRAKASH REFRIGERATION CO.

Specialist in:

- Ice/Ice Candy / Ice Cream Machineries
- Room A.C. & Split A.C. Spares
- Bus/Car Airconditioning Equipments
- Cold Storage / Chilling Plant Equipments

1, Chandney Chowk Street, Kolkata, West Bengal, Bharat-7000723
Ph. 033-22150618 | E-mail: p.sekhani@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

परिचय प्रमाणसागर

जन्म	- २७ जून १९६७
पूर्व नाम	- नवीन कुमार जैन
पिता का नाम	- श्री सुरेन्द्र कुमार जैन
माता का नाम	- श्रीमती सोहनी देवी जैन
जन्म स्थान	- हजारीबाग, झारखण्ड, भारत
वैराग्य	- ४ मार्च १९८४, राजनांदगांव, छतीसगढ़, भारत
क्षुल्लक दीक्षा	- ८ नवम्बर १९८५, सिद्ध क्षेत्र आहार जी, जिला- टीकमगढ़, मध्य प्रदेश,भारत
ऐलक दीक्षा	- १० जुलाई १९८७, अतिशय क्षेत्र, थुवौनजी, मध्य प्रदेश, भारत
मुनि दीक्षा	- ३१ मार्च १९८८ जन्म कल्याणक सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी जी, मध्यप्रदेश, भारत
दीक्षा गुरू	- संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी

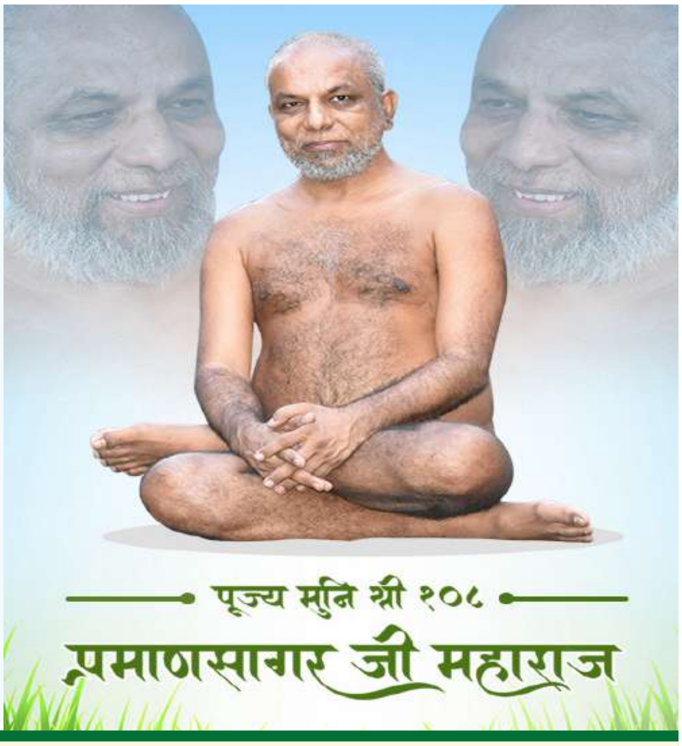

मुनि प्रमाणसागर जी - जीवन परिचय

'यथा नाम तथा गुणः' की उक्ति का जीवन्त रूप दिखाने वाले, बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज युगसाधक सन्तशिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य हैं, उनका गहन-गम्भीर ज्ञान, निर्दोष-निस्पृह चर्या और सहज-सरल वृत्ति सहज ही सभी को अपनी ओर खींच लेते हैं, धर्म और दर्शन जैसे गूढ़ विषयों की सरल और सरस प्रस्तुति आपका अनुपम वैशिष्टय है, धर्म को पारम्परिक जटिलताओं से मुक्त करते हुए जीवन-व्यवहारोपयोगी रूप में प्रस्तुत किया है आपने, यही कारण है कि एक बार आपके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति, आपसे अभिभूत होकर आपका ही हो जाता है। मुनिश्री की वाणी में ओज, लालित्य और सहज आकर्षण है, अपनी बात को बड़ी सहजता और सरलता से श्रोताओं के हृदय में उतार देने में सिद्धहस्त हैं, यही कारण है कि आपके प्रवचनों में हजारों-हजार श्रोताओं के मध्य भी सूचीपात नीरवता रहती है।

मुनिश्री द्वारा प्रवर्तित 'शंका-समाधान' कार्यक्रम किसी भी जैन सन्त द्वारा टी. व्ही. चैनल पर प्रसारित होने वाला ऐसा प्रथम कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से सर्वसाधारण जन सीधे मुनिश्री से जुड़कर अपने धर्म और जीवन व्यवहार से जुड़ी जटिलतम शंकाओं का त्वरित और सटीक समाधान पाकर अभिभूत हो जाते हैं। मुनिश्री अपनी अनुभवप्रसूत-वाणी से मानव जीवन की सभी जटिलतम गुत्थियों को पल भर में ही खोल देते हैं, यही कारण है कि अपने आरम्भकाल से लेकर आज तक इस कार्यक्रम की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, इसके लाखों दर्शक प्रतिदिन अपने परिवार सहित समय से पूर्व ही टी.व्ही. चैनल देखने बैठ जाते हैं। 'शंका-समाधान' का यह कार्यक्रम विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा प्रतिदिन देखा/सुना जा सकता है। अब तक हजारों लोगों ने इस कार्यक्रम से जुड़कर अपने जीवन की दिशा और दशा में सकारात्मक परिवर्तन घटित करते हुए जीवन को आनन्ददायक और सोद्देश्य बनाया है।

माननीय राजस्थान उच्चन्यायालय द्वारा जैन साधना के प्रधान अंग 'सल्लेखना/संथारा' को आत्महत्या निरूपित करते हुए दिए गए स्थगन-आदेश के बाद मुनिश्री ने 'धर्म बचाओ आन्दोलन' का सूत्रपात कर जैन संस्कृति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मुनिश्री के आह्वान पर २४अगस्त २०१५ को सम्पूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ विदेशों में भी एक समय में एक परिधान में एक करोड़ से अधिक लोगों ने मौनप्रदर्शन किया, मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि सल्लेखना आत्महत्या नहीं है, यह तो मृत्यु के अवश्यंभावी हो जाने की स्थिति में जैन साधना पद्धति के अन्तर्गत साधक द्वारा अपनी साधना के बल पर मृत्यु के भय और कष्ट से ऊपर उठते हुए, साक्षीभाव से उसके अभिनन्दन की अनूठी परम्परा एवं दुर्लभ कला है। 'धर्म बचाओ आन्दोलन' के इस ऐतिहासिक प्रदर्शन के पश्चात् माननीय उच्चतम न्यायालय ने सल्लेखना पर दिए गए स्थगन-आदेश पर अन्तरिम रोक लगा दी है।

प्रारम्भिक जीवन:- तत्कालीन बिहार एवं वर्तमान झारखण्ड राज्य के हजारीबाग नगर में धर्म व संस्कारपरायण श्रावकश्रेष्ठी श्रीमान् सुरेन्द्र कुमार-श्रीमती सोहनी देवी सेठी के घर २७ जून १९६७ को बालक नवीन का जन्म हुआ। नवीन अपने माता-पिता की दूसरी संतान थे, नवीन के अग्रज अनिल कुमार जैन सेठी, अनुज अरविन्द जैन सेठी एवं अनुजा श्रीमती नीतू जैन गृहस्थ जीवन में हैं। लौकिक अध्ययन के प्रति **शेष पृष्ठ २१ पर...**

पृष्ठ २० से... लगनशील एवं अन्य सहपाठियों की अपेक्षा में अधिक अध्यवसायी नवीन की पूरी शिक्षा हजारीबाग में ही हुई।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के साथ विचार-विमर्श करते हुए
संकलित चित्र

संयम यात्रा/ वैराग्य एवं दीक्षा:- जनवरी १९८३ में सन्तशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का ससंघ पदार्पण हजारीबाग में होने पर नवीन कुमार ने उनके प्रथम दर्शन किए, आचार्य श्री के रूप में नवीन को साक्षात् भगवद्दर्शन की अनुभूति हुई, बार-बार आचार्य श्री के सम्पर्क में आने पर नवीन के मन में आत्मकल्याण की भावना बलवती होती चली गई, जिसका परिणाम हुआ ४मार्च १९८४ को १७वर्षीय नवीन का २वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत के साथ आचार्यश्री के संघ में प्रवेश, जहाँ पर साधना के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा साक्षात् गुरुमुख से प्राप्त की। आचार्यश्री ने ब्र. नवीन भैया की साधना तत्परता और योग्यता देखकर ८नवम्बर १९८५ को श्री सिद्धक्षेत्र अहारजी में क्षुल्लक दीक्षा देकर 'प्रमाणसागर' नाम दिया। ११जुलाई १९८७ को अतिशयक्षेत्र थूबौन जी में ऐलक दीक्षा के पश्चात् ३१मार्च १९८८ (तदनुसार महावीर जन्मकल्याणक) को सिद्धभूमि सोनागिरि में दिगम्बरत्व का साधक घोषित करते हुए मुनिदीक्षा प्रदान की।

साधना प्रवास:- दिगम्बर जैन साधुओं की आचारसंहिता के अनुसार मुनिश्री किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रहते हैं। मुनिश्री वर्षाकाल में जीवों की विराधना से बचने के लिए वर्षायोग-चातुर्मास के रूप में चार माह तक एक ही स्थान पर रुकने के अतिरिक्त अपनी साधना की भाँति निरन्तर गतिशील रहते हैं। ज्ञातव्य है कि जैन मुनि दीक्षा के उपरान्त आजीवन पैदल विहार ही करते हैं, वाहन का प्रयोग नहीं करते। मुनिदीक्षा के उपरान्त कुछ वर्षों तक आचार्यसंघ में ही रहकर साधनारत रहने के पश्चात् आचार्यश्री की आज्ञा से विगत ३०वर्षों से संघ के अन्य साधुओं के साथ विहार करते हुए निरन्तर अपने ज्ञान, ध्यान और तप के प्रति पूर्ण सजग और समर्पित हैं। मुनिश्री के अब तक हुए चातुर्मास की सूची इस प्रकार है:

१९८४ मढ़िया जी, जबलपुर (पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी के साथ); १९८५ आहार जी टीकमगढ़ (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८६ पपोराजी, टीकमगढ़ (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८७ थूबौन जी (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८८ मढ़िया जी, जबलपुर (पूज्य आचार्यश्री के साथ); १९८९ पिण्डरई (मंडला); १९९० शाहपुरा भिटोनी, जबलपुर; १९९१ सतना; १९९२ विदिशा; १९९३ अतिशय क्षेत्र रामटेक; १९९४ कटनी; १९९५ भोपाल; १९९६ गोटेगाँव; १९९७ सागर; १९९८ ललितपुर; १९९९ अतिशय क्षेत्र भोजपुर; २००० विदिशा; २००१ टीकमगढ़; २००२ फिरोजाबाद; २००३ अतिशय क्षेत्र बहोरीबंद; २००४ सतना; २००५ हजारीबाग; २००६ श्री सम्मेद शिखर जी; २००७ श्री सम्मेद शिखर जी; २००८ गया; २००९ श्री सम्मेद शिखर जी; २०१० रांची; २०११ पावापुरी; २०१२ कोडरमा; २०१३ कोलकाता; २०१४ श्री सम्मेद शिखर जी; २०१५ जयपुर; २०१६ अजमेर; २०१७ उदयपुर; २०१८ रतलाम; २०१९ श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजाजी ; २०२० कटनी; २०२१ सम्मेद शिखरजी; २०२२ श्री सम्मेद शिखर; २०२३ गुनायतन; २०२४ इंदौर; २०२५ भोपाल हुआ था।

चार बातें:- मुनिश्री अपनी ओजस्वी वाणी और माधुर्य सिंचित शैली में चार बिन्दुओं का आश्रय लेकर विविध विषयों, **शेष पृष्ठ २२ पर...**

२७ जून
मुनिश्री प्रमाणसागर जी के जन्म पर्व पर बधाईयाँ
Sanjay T. Godika
Mob. 09821135046
Neera Godika
Aastha Godika
Mob. 9821761818
Nishta Godika
PHULLARA
B-702, Arihant Appt., Govind Nagar, Soda Wala Lane,
Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400092
Ph.: 022-28903982
E-Mail : phullaraworld@gmail.com

२७ जून
दिगम्बर मुनिश्री प्रमाणसागर जी के
जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वदंन्!
-: प्रतिष्ठान :-
आर नथमल बैंकर्स पांडिचेरी
गौतम ज्वैलर्स पांडिचेरी
वेलकम ज्वैलर्स पांडिचेरी
ब्रह्मा ज्वैलर्स पांडिचेरी
जयपारस ज्वैलर्स पांडिचेरी
ममता बैंकर्स पांडिचेरी
गौतम चंद जम्बू कुमार सेठी जैन
50, एजिलनगर, मेन रोड, पांडिचेरी- 605003
फोन : 0413-2210608 मो. 09894040069

'जैन एकता' से ही होगा
जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं,
चारित्र
सत्य
अचौर्य
ज्ञान
अहिंसा
अपरिग्रह

Kailash Kaveria
Mob.: 9820237202
Office no B- 501b/502/503, Ramji House, Jambul Wadi,
Kalbadevi Road, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002
Tel (O): 022-46019664 / 46020874

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

अणुव्रत प्रेरक गुरूवर महाप्रज्ञ जी के
जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वंदन

Kesharichand Naveen Navneet Chhajer
Navratan Polymers Pvt. Ltd.
Navratan Poly Colours
Mob.: 9848015769/ 7207922200
HYDERABAD
Shed No 11 Pase II IDA Cheralapally, Hyderabad, - 500051

पृष्ठ २१ से... सम-सामयिक प्रसंगों और मानव जीवन के प्रगतिपथ का युगानुकूल विवेचन करने में सिद्धहस्त हैं। विगत कुछ वर्षों से मुनिश्री चार बातों के माध्यम से मानवमात्र को अपने उपदेशामृत का पान करा रहे हैं। मुनिश्री के ऐसे ही विविध विषयक प्रवचनों के संकलन 'चार बातें' शीर्षक से छह भागों में प्रकाशित हैं। तीन भाग प्रकाशनाधीन हैं। 'चार बातें' भाग- १ 'चार बातें' भाग- २ 'चार बातें' भाग- ३ 'चार बातें' भाग- ४ 'चार बातें' भाग- ५ 'चार बातें' भाग- ६

गुणायतन:- जैन साधना पद्धति में आत्मा के क्रमिक विकास के सोपानों को गुणस्थान कहा जाता है, इन्हीं गुणस्थानों को साकार करने का अद्भुत प्रयास है- 'गुणायतन'।

'गुणायतन' मुनिश्री के प्रौढ़ चिन्तन और परिपक्व परिकल्पना का जीवन्त प्रमाण है। जैन धर्मावलम्बियों के शिरोमणि तीर्थस्थल श्रीसम्मेद शिखर जी की तलहटी में निर्माणाधीन यह एक ऐसा उपक्रम है, जिसके माध्यम से पोथियों की बातों को पल में जाना जा सके।

'गुणायतन' एक ऐसा ज्ञानमन्दिर बनने जा रहा है, जो जैन सिद्धान्तों की प्रयोगशाला बनकर मानवमात्र के आत्मविकास का दिव्य द्वार सिद्ध होगा, यहाँ आकर मानव अपने जीवन के मर्म को जान सकेगा, जैन सिद्धान्तों के विविध पक्षों को आधुनिकतम तकनीक के साथ एनिमेशन होलोग्राम के माध्यम से शब्द, संगीत और प्रकाश के साथ ९डी और २७०डिग्री के स्क्रीन पर दिखाया जा रहा है, इस प्रकार 'गुणायतन' वास्तव में आत्मिक गुणों का दिग्दर्शन कराने वाला गुणगर्भित है।

सामाजिक उत्थान कार्य:- मध्यप्रदेश की राजधानी 'भोपाल' में संचालित 'आचार्यश्री विद्यासागर प्रबन्धविज्ञान संस्थान' उच्चशिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है तो मधुवन शिखर जी में स्थापित एवं कार्यरत 'श्रीसेवायतन' मानव विकास, ग्रामीण विकास एवं शाश्वत सिद्धक्षेत्र की पावनता की संरक्षा और सुरक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील है। 'दयोदय महासंघ' के अन्तर्गत संचालित शताधिक गौशालाएँ गौ-संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

युवा पीढ़ी को धर्म और धर्मनिष्ठ गतिविधियों से जोड़ने के लिए मुनिश्री की प्रेरणा से सन् २००५ में 'राष्ट्रीय दिगम्बर जैन युवा महासंघ' की स्थापना की गई, वर्तमान में इसकी शताधिक शाखाएँ युवा पीढ़ी को संस्कार और संस्कृति से जोड़ते हुए उनके बहुमुखी विकास में सहकारी बनी हुई हैं। मुनिश्री के सान्निध्य में युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, जिनमें से प्रमुख है- 'ACT' अर्थात् Accept, Change And Transform. यह कार्यक्रम व्यक्तित्व-विकास की दिशा में युवा पीढ़ी की सर्वोच्च प्राथमिकता और आकर्षण का केन्द्र बन गया है। जैन समाज के समग्र विकास के उद्देश्य से 'जैन जनगणना' एवं 'जैन जनगणना-जागरूकता अभियान' का कार्य शुरु किया गया है। मुनिश्री के सान्निध्य में विविध धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। मुनिश्री ने अनेक जिनमन्दिरों/जिनप्रतिमाओं के पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में अपना मंगल सान्निध्य प्रदान किया है। मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में बीजाक्षरयुक्त मूल संस्कृत के सिद्धचक्र विधान के क्रमशः ४८, ६४ एवं ८४ मण्डलीय ऐतिहासिक आयोजन सानन्द सम्पन्न हुए हैं। इन विधानों में हजारों हजार श्रद्धालुओं ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष (ऑनलाइन, इंटरनेट, टीवी- चैनल, प्रमाणिक एप आदि के माध्यम से) रूप से सहभागी बनकर धर्मलाभ लिया है।

दिगम्बर आचार्यों व मुनिश्री के चातुर्मास

परमेष्ठी नाम	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	चातुर्मास स्थल
आचार्य श्री संभव सागरजी	०३.०५.१९४१	०९.०७.१९६७	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
आचार्य श्री आनंद सागरजी	२०.०६.१९५७	०२.०६.१९७६	वसंतकुंज, दिल्ली
आचार्य श्री सुनील सागरजी	०७.१०.१९७७	२०.०४.१९९२	अहमदाबाद, गुजरात
गणधराचार्य श्री कुन्थु सागरजी			कुंथुगिरि, महाराष्ट्र
आचार्य श्री देवनंदी जी			णमोकार तीर्थ, नासिक
आचार्य श्री श्रुत सागरजी	०१.०६.१९६९	२१.०२.१९८८	नजफगढ़, दिल्ली
आचार्य श्री सिद्धांत सागरजी	०१.०४.१९६६	२४.१०.१९८७	बेलाजी, (म.प्र.)
पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागरजी	१८.१२.१९७१	२१.११.१९९१	विरागोदय तीर्थ, पथरिया, (म.प्र.)
आचार्य श्री विशद सागरजी	११.०४.१९६४	०८.०२.१९९६	धार/ इंदौर, (म.प्र.)
आचार्य श्री विमर्श सागरजी	१५.११.१९७३	१४.१२.१९९८	सहारनपुर, (उ.प्र.)
आचार्य श्री विनम्र सागरजी	१०.०९.१९६३	०८.०६.२००३	विजय नगर इंदौर, (म.प्र.)
आचार्य श्री विहर्ष सागरजी	०७.०३.१९७०	१४.१२.१९९८	उदयपुर, राजस्थान
उपा. श्री विहसंत सागरजी	१२.०८.१९८३	२७.०२.२०१२	भिण्ड, (म.प्र.)
उपा. श्री विभंजन सागरजी	२४.०७.१९८३	२७.०२.२०१२	धार, (म.प्र.)
उपा. श्री विरंजन सागरजी			संभाजी नगर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र
मुनि श्री आदित्य सागरजी	२४.०५.१९८६	०८.११.२०११	कीर्ति नगर, जयपुर, राजस्थान
मुनि श्री आस्तिक्य सागर	०६.०३.१९८४	०८.११.२०११	जलगांव, महाराष्ट्र
मुनि श्री समत्व सागरजी			शाहगढ़, (म.प्र.)
मुनि श्री प्रणुत सागरजी	२६.०३.१९९३	०६.१०.२०१३	उज्जैन, (म.प्र.)
मुनि श्री सौम्य सागरजी	१८.०७.१९९६	०६.१०.२०१७	टीकमगढ़, (म.प्र.)
मुनि श्री सारस्वत सागरजी	०१.०७.१९९८	०६.१०.२०१७	नाद्रे, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मुनि श्री विव्रत सागरजी	०४.०९.१९९३	२५.११.२०१५	शामली, (उ.प्र.)
गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी	०१.०१.१९५४	३१.०१.१९८०	पुष्पगिरि (देवास), म.प्र.
आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी	२३.०७.१९७०	१८.०४.१९८९	तरुणसागर धाम, मुरादनगर, (उ.प्र.)
आचार्य श्री अरुण सागरजी	२३.०७.१९६३	१८.०४.१९८९	आराध्यधाम से. ८८ फरीदाबाद, हरियाणा
आचार्य श्री सौरभ सागरजी	२२.१०.१९७०	२१.०९.१९९४	देहरादून, उत्तराखंड
आचार्य श्री पुलक सागरजी	११.०५.१९७०	११.१२.१९९५	उदयपुर, राजस्थान
आचार्य श्री प्रमुख सागरजी	२८.०९.१९७३	१३.१०.२०००	कोलकाता, पं. बंगाल
आचार्य श्री तन्मय सागरजी	०२.०३.१९७०	१७.०४.२०१४	सम्मेदशिखरजी, झारखंड
आचार्य श्री गुणधरनंदी जी	२०.०९.१९७३	०८.०२.१९९०	नवग्रह तीर्थ, वरूर, कर्नाटक
आचार्य श्री भारत भूषणजी	०१.०९.१९८०	१८.०१.२००७	मुजफ्फरनगर, (उ.प्र.)
आचार्य श्री विवेक सागरजी	१३.१०.१९७२	२५.०७.१९९३	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
आचार्य श्री ज्ञेय सागरजी			सराक भवन, श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
निर्यापक मुनि श्री समता सागरजी	१३.०७.१९६२	२५.०९.१९९३	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
मुनि श्री विनम्र सागरजी	१४.०८.१९७९	२१.०८.२००४	बागीदौरा, राजस्थान
मुनि श्री अजित सागरजी			सूरत, गुजरात
आचार्य श्री वैराग्यनंदीजी	२६.१०.१९७४	१५.०३.१९९४	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
मुनि श्री पूज्य सागरजी			परिवहन नगर, इंदौर, (म.प्र.)
मुनि श्री अनुमान सागरजी	०६.०२.१९७७	२७.०२.२०१२	कम्पिलजी, फरूखाबाद, (उ.प्र.)
गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी	२३.१०.१९३४	चै.कृ. ०२.१९५६	रायगंज, अयोध्य, (उ.प्र.)
आर्यिका श्री गुरुमति माताजी	३०.०७.१९५६	१०.०२.१९८७	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
आर्यिका श्री दृढ़मति माताजी	१८.०५.१९६१	१०.०२.१९८७	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड
आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी	०६.०५.१९६२	०७.०८.१९८९	दिल्ली
गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमति माताजी	२१.०५.१९४९	२३.०९.१९७०	सवाई माधोपुर, राजस्थान
गणिनी आर्यिका श्री विशिष्ट माताजी			प्रतापगढ़, राजस्थान
गणिनी आर्यिका श्री आर्षमति माताजी			बढ़ौत, (उ.प्र.)
गणिनी आर्यिका श्री शुभमति माताजी	३१.०५.१९७५	२३.०५.२०१०	श्री सम्मेदशिखरजी, झारखंड

कृपया सभी वर्षायोग आयोजक कमेटियां इस बार एक तीर्थ सुरक्षा कलश की स्थापना भी करें।
उसकी पूरी जानकारी तीर्थक्षेत्र पीयूष जैन ७२१७७५६८७१ या
चैनल महालक्ष्मी से प्राप्त कर सकते हैं।

।। ॐ अर्हम् ।।
श्री महाप्रज्ञ 'तेरापंथ' के थे भास्कर
जैन जगत सदा वंदन हे गणरत्नाकर!
आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्म पर्व पर
कोटि-कोटि वंदन

Manoj Kumar Daga
Mob.: 9845062865
Qualityplus Star Krraft Corporation
#46, Manchanayakahalli, Grama Panchayath,
Beemanahalli, Village, Bidadi Hobli , Dist. Ramanagar,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 562109
Mob. : 8861135836

Res. : Flat #3A, Rajeshwari Homes Apts, 10th Cross,
Ideal Homes Society, Rajarajeshwari Nagar, Bengaluru,
Karnataka, Bharat - 560098
Ph. : 080-28602078

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य महाप्रज्ञ जी

।। ॐ अर्हम् ।।
हे प्रभो! यह तेरापंथ
श्री महाप्रज्ञ 'तेरापंथ' के थे भास्कर
जैन जगत सदा वंदन हे गणरत्नाकर!
आचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वंदन

Ujjain Kumar Malu
Mob: 94312 14533
MALU SILK PROCESSOR
Nayabazar, Bhagalpur, Bihar, Bharat-812002

वृद्धाश्रम की बढत विचारनीय- अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी म.सा.

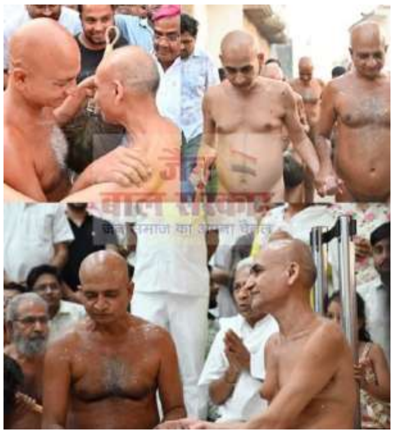

तरूणसागरम तीर्थ: अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज की उत्तराखण्ड के बद्रिनाथ से हरिद्वार से दिल्ली तरुणसागरम तीर्थ तक अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रही है। अतिशय क्षेत्र बरनावा की पावन धरा पर दो बड़े आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज का हुआ मिलन समारोह में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि

मकान तो चार दीवारों से बन जाते हैं लेकिन घर बनाने और बसाने के लिए सब्र, समझ, प्रेम, और बड़े बुजुर्गों का सम्मान बहुत जरूरी है, किसी बुज़ूर्ग से पूछा- दादा जी कैसी कट रही है ज़िन्दगी-? बुज़ूर्ग दादा जी ने बहुत सदे हुए लफ़्ज़ों में और रून्धे हुई आवाज में कहा, बेटा! जहाँ से शुरू किया था सफ़र वहीं पे पहुंच गए, बेटियों को दामाद ले गये और बेटों को बहू ले गई। सच है मित्रों! आज की भाग दौड़ की ज़िन्दगी में कौन करता है बुज़ूर्गो की परवरिश? कौन रखता है ध्यान? कौन करता है उनकी सेवा? हमारे घर, परिवार और समाज में, बुज़ूर्ग अपनों के बीच में भी अकेले हो रहे हैं। अपनों के साथ अकेलापन महसूस कर रहे हैं, कहीं कहीं तो उन्हें जान बूझकर अकेला छोड़ दिया जाता है या उम्र के ढलान पर उन्हें वृद्ध आश्रम में छोड़ दिया जाता है। कहना गलत नहीं होगा आज देश के सर्वेक्षण में ४०% बुज़ूर्गो का कहना है कि ४४% प्रतिशत बेटे, २८% बहू और १४% से ज्यादा बेटीयों द्वारा बड़े बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार अशिष्ट वचन करने और कहने की बात सामने आ रही है, इसलिए आज हमारे बड़े बुज़ूर्ग शारीरिक रूप से कम, मानसिक रूप से ज्यादा अस्वस्थ दिख रहे हैं और उम्र के पड़ाव से जूझ रहे हैं। दरअसल एकल परिवारों का चलन और स्वार्थ परक सोच, अधिक ऐजुकेशन की सोच ने आज की पीढ़ी को अकेला कर दिया है, जो आने वाले समय में उनके लिए ही घातक सिद्ध होगा। भारत में जहाँ वानप्रस्थ आश्रम बनते थे, आज उसी देश में वृद्ध आश्रम कुकुर मुत्तों की तरह खुल रहे हैं, जो इस देश के दुर्भाग्य का द्योतक है, पहले भारत देश का एक बुज़ूर्ग चार जबान बेटों की परवरिश हँसकर कर लेता था और आज उसी देश के चार जवान बेटे मिलकर एक बुज़ूर्ग की परवरिश नहीं कर पा रहे हैं, विचार करें?

- नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल,
औरंगाबाद

भारत सरकार द्वारा जैन श्रावक श्री हरखचंदजी नाहटा रजत स्मारक सिक्के का लोकार्पण

जैन समाज के बहुमूल्य रत्न स्व: श्री हरखचंदजी नाहटा के २५ वें स्मरणोत्सव पर भारत सरकार द्वारा पहली बार किसी जैन श्रावक पर ४०ग्राम का शुद्ध रजत स्मारक सिक्का जारी किया गया।

भारत सरकार द्वारा जारी
श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचन्द नाहटा स्मारक सिक्का
अनावरण समारोह
प.पू. जैनाचार्य श्री जिन पीयूषसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मानानीय राज्यपाल, राजस्थान
श्री अर्जुनराम मेघवाल

श्री नाहटा की जन्मभूमि बीकानेर के हरखमणि एस्टेट में जैनाचार्य श्री जिनपियुष सागरसूरीश्वर जी म.सा. कि पावन निश्रा एवं उनके शिष्यरत्न पूज्य मुनिश्री सम्यकरत्नसागर जी म. सा., साध्वी श्री प्रभांजना श्री म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में प्रसिद्ध समाजसेवी हरखचंदजी नाहटा के २५वें स्मरणोत्सव पर भारत सरकार द्वारा २५ रुपए का शुद्ध चांदी रजत स्मारक सिक्के का अनावरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, केंद्रीय सांस्कृतिक व पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, राजस्थान सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री बुलाकीदास कल्ला, स्वास्थ मंत्री राजेन्द्र चौधरी, विधायक बिहारीलाल विश्नोई, पुलिस महानिरीक्षक श्री ओमप्रकाश, जिला समाहर्ता श्रीमती नम्रता वृष्णि, उद्योगपति, व्यापारी, साहित्यकार, पेशेवर व समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

समारोह में पदमचंद नाहटा, मोहित नाहटा, कन्हैयालाल बोथरा, टोडरमल लालाणी, ललितकुमार नाहटा, प्रो. त्रिलोक पारख जैन, राजेश जैन आदि महानुभावों ने अपने विचार साझा किए।

- नंदलाल भाटिया 'नवल'
मुम्बई

विश्व शांति का दिया संदेश

मुंबई: श्री जैन धार्मिक शिक्षण संघ SJDS संस्था ने अपने 75 वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में विश्व शांति का संदेश दिया, इस मौके पर लघु शांति स्नात्र महोत्सव का आयोजन किया गया, इस अवसर पर आचार्य हेमचंद्र सूरीश्वर जी महाराज के शिष्य आचार्य अपराजित सूरीश्वर जी महाराज, पन्यास प्रवर विजयजी और मुनिराज युगंधर विजयजी ने अपनी निश्रा प्रदान की, कार्यक्रम में 2000 से भी अधिक श्रद्धलुओं ने भाग लिया, इस अवसर पर मुंबई से पाठशाला के ज्ञानदाता पंडित, शिक्षक और शिक्षिकाओं ने स्नात्र पूजा में भाग लिया।

'श्री विद्याप्रमाण गुरुकुलम' में पंचकल्याणक महा महोत्सव की मंगल शुरुआत'

भोपाल (अवधपुरी): अवधपुरी की पुण्यभूमि पर एक नई सुबह को जन्म दिया और यह सुबह केवल कालचक्र की नहीं, आत्मचक्र की भी उद्घोषणा कर रही है।

श्री विद्या प्रमाण गुरुकुलम्, आचार्य विद्यासागर संस्थान, अवधपुरी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ हुआ, यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं,बल्कि आत्मकल्याण की परंपरा का प्रारंभ है, ऐसा दृश्य बना, जिसमें श्रद्धा, समर्पण और साधना का संगम देखने को मिला।

शोभायात्रा और घट यात्रा: नगर में उमड़ा श्रद्धा का सागर, प्रात:कालीन वेला में समन्वय नगर दिगम्बर जैन मंदिर से एक भव्य घट यात्रा तथा श्री जी की शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें मुनिश्री प्रमाणसागर जी ससंघ साक्षात सहभागी हुए, इस दिव्य यात्रा में नगर जनों की अपार श्रद्धा और सहभागिता देखने को मिली।

विशेष सौभाग्यशाली परिवारों का योगदान

- ध्वजारोहण का पुण्य अवसर ओमेगा ग्रुप के संचालक श्री हरिप्रकाश जी, श्रीमती मनीषा जी, और उनके पुत्र शशि शेखर जैन के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।
- मंडप उद्घाटन का सौभाग्य नरेंद्र जी एवं श्रीमती प्रतिभा टोंगिया को प्राप्त हुआ।
- दीप प्रज्वलन का गौरव सुबोध जैन (नगर निगम) को प्राप्त हुआ।
- मंगल कलश स्थापना का महत्तम सौभाग्य राजेश भारिल एवं परिवार को प्राप्त हुआ, जिन्होंने सम्पूर्ण पंचकल्याणक के आयोजन की व्यापक व्यवस्थाओं में अग्रणी भूमिका निभाई।

पंचकल्याणक: एक आयोजन नहीं, एक परंपरा प्रवचन में मुनिश्री ने कहा कि 'यह पंचकल्याणक किसी एक मंदिर का नहीं, हज़ारों हृदय-मंदिरों के जागरण की प्रक्रिया है।' तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की प्रतिष्ठा एक स्थूल जिनालय में नहीं, अपितु भावों के मंदिरों में हो रही है।

श्रद्धा, शुद्धि, तन्मयता और अनुशासन – चार मूलमंत्र

मुनिश्री ने सभी साधकों को चार जीवनसूत्र दिए:

१. श्रद्धा: 'पाषाण में भगवान के दर्शन श्रद्धा से होते हैं।'
२. शुद्धि: बाह्य नहीं, अंतरात्मा की शुद्धि ही उद्देश्य हो।
३. तन्मयता: संपूर्ण डूबकर आराधना करें।
४. अनुशासन: समयबद्धता और निर्देशों का पालन ही सफलता की कुंजी है।

गुरुकुल: आत्मविकास का सशक्त केंद्र

गुरुकुल की औपचारिक शुरुआत आगामी १६ जून से होने जा रही है, यह संस्थान केवल शिक्षा का नहीं, अपितु संस्कारों का केंद्र होगा यहां के विद्यार्थी न केवल ज्ञानी, अपितु समाज के 'आइकॉन' बनेंगे, ऐसा मुनिश्री ने भावभरे शब्दों में व्यक्त किया।

'श्रद्धा में वह शक्ति है, जो मिट्टी से भी भगवान बना देती है।'

- मुनिश्री प्रमाणसागर जी

वरिष्ठ पत्रकार एम.सी. जैन राष्ट्रस्तरीय पुरस्कार से सम्मानित

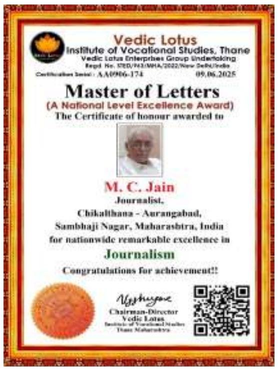

Vedic Lotus
Institute of Vocational Studies, Thane
Vedic Lotus Enterprises Group Undertaking
Certification Serial : AA0906-174 09.06.2025
Master of Letters
(A National Level Excellence Award)
The Certificate of honour awarded to
M. C. Jain
Journalist,
Chikalthana - Aurangabad,
Sambhaji Nagar, Maharashtra, India
for nationwide remarkable excellence in
Journalism
Congratulations for achievement!!
Chairman-Director
Vedic Lotus
Thane Maharashtra

चिकलठाणा-महाराष्ट्र: भारत वर्ष के प्रख्यात समाजसेवी, हिंदी मराठी लेखक, वरिष्ठ पत्रकार, 'जैन गजट' के राष्ट्रीय प्रतिनिधि, नवभारत टाइम्स, जिनागम, यंगलीडर, लोकमत समाचारपत्र लोकमत टाइम, तरुण भारत, स्वरगंगा के लेखक एम.सी. जैन को ठाणे (मुंबई) के वैदिक लोटस की ओर से राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार 'मास्टर ऑफ लेटर' घोषित किया गया। राष्ट्र संत सरस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी, भारत गौरव आचार्य गुप्तीनंद जी, आर्यिका श्री आस्थाश्री माताजी आदि अनेक संस्थाएं व परिचितों आदि की ओर से अभिनंदन भी किया गया।

।। ॐ अर्हम् ।।
प्रेक्षा प्रणेता, युग प्रधान, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के
पावन जन्म दिवस पर कोटि कोटि वंदन
''अभिवंदना''
Narendra Duggar
Mob.: 9425206595
8959906595
Pravesh Duggar
Gemologist
Mob.: 9669992999
NAGINA GEMS
Arham Gems & Testing Lab
अरिहंत दर्शन, जैन गर्ल्स हॉस्टल
— Prateek Duggar —
Arihant O-T Surgical
रायपुर
राजश्री बुटीक
सदर बाजार, रायपुर, छत्तीसगढ़

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

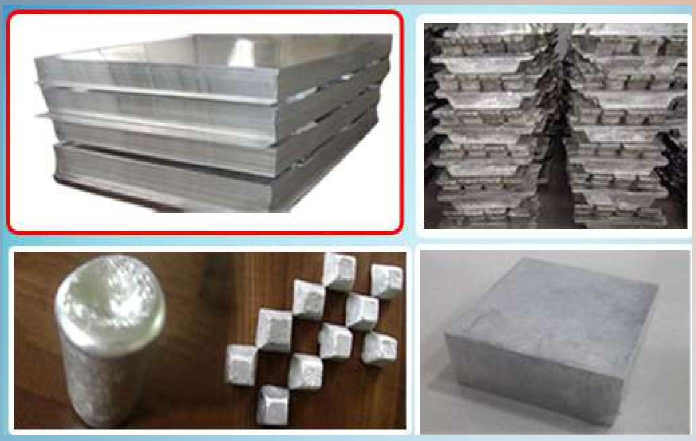

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN
JAYANT BABULAL JAIN
SHAILESH BABULAL JAIN

**Manufactures of Aluminium Alloy Ingot,
Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar,
Aluminium Shots, Aluminium Cubes**

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पद्म परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो
पिया मन भाए,
बहु वही जो
सास मन भाए

रिश्तों के
बेताज
बादशाह
पदमचंद जैन

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

FCP JITO
पदमचंद जैन

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन

उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया	चंद्रराज सिंघवी	डॉ. प्रकाश गोलेछा	नरेन्द्र कुम्मार जैन	बसंत जैन	संजय जैन	सुरेन्द्र कुमार जैन
अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष	योजना मंत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.वि.	राष्ट्रीय संगठन मंत्री	कोर्डिनेटर	राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

डॉ. बाबू जगजीवन राम शोध संस्थान और कर्नाटक आदि जम्भवा संगठन कोंका के संयुक्त तत्वावधान में डॉ.जगजीवन राम ऑडिटोरियम, बेंगलुरू में 'संविधान जागरूकता सम्मेलन' का आयोजन किया गया। पलानाहल्ली मठ के डॉ. सिद्धराजस्वामीजी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में विभिन्न दलित संगठनों के पदाधिकारी मौजूद थे। विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने अपने भाषण में कहा,'संविधान से ही हमें समानता का अधिकार मिला है, संविधान से ही राष्ट्र में विकास हुआ है, संविधान देश में बहने वाले रक्त की तरह है, ठीक वैसे ही जैसे शरीर के अंदर होता है।' संविधान, वह रक्त कण है जो 'भारत' के कोने-कोने में प्रवाहित होता है, समाज के स्वास्थ्य को बनाए रखता है, सह-अस्तित्व, सद्भाव, एकता को बढ़ावा देता है और देश के स्वास्थ्य की रक्षा करता है, हमें अपने संविधान पर गर्व है, उन्होंने कहा, 'भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर, जिन्होंने ऐसा संविधान बनाया, व एक असाधारण व्यक्ति हैं।' समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवा के लिए प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सम्मानित किया गया, संस्था के हनुमंथप्पा और सिद्धराजू ने अतिथियों का सम्मान किया।

आनंद सिनेमा बैनर तले निर्मित 'वीर शहीदों के शौर्य एवं बलिदान' को दर्शाता देश भक्ति गीत रिलीज किया गया। प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री प्रोफेसर दोड्डुरगे गौड़ा की रचना को ऋषभ रत्नम ने अपने संगीत से सजाया एवं प्रसिद्ध गायक अजय वारियर ने अपनी आवाज दी। राम द्वारा निर्देशित गीत जननी जन्मभूमि का छायाग्रहण हरिहरन एवं संकलन कलरफुल जीवा ने किया।

निर्माता महेंद्र मुणोत द्वारा अभिनीत इस गीत में ४० से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने अभिनय किया, इस गीत को यूट्यूब चैनल महेंद्र मुणोत जैन पर देखा जा सकता है।

सर्व सिद्धि विनायक गेळेयरा बळगा रंगनाथ कॉलोनी मैसूर रोड में श्री बेंगलुरु नगर देवता श्री अण्णम्मा देवी उत्सव का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की। श्री मूणोत ने अपने वक्तव्य में वीर सैनिकों को नमन करते हुए कहा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता से प्रत्येक भारतीय अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है, आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

BMS EDUCATIONAL TRUST
B.M.S. COLLEGE FOR WOMEN
ZEAL
2025

बी एम एस महिला महाविद्यालय बसवनगुड़ी द्वारा खेलकूद प्रतियोगिता झील २०२५ का आयोजन किया गया। कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, नेट बॉल स्पर्धा में १५ से भी ज्यादा महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के समापन समारोह में मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने विजेता टीम को पुरस्कृत किया। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

बेंगलुरु शहर की देवी श्री अन्नमदेवी उत्सव का आयोजन करुणाडु दीपा शंकरनाग फ्रेंड्स एसोसिएशन द्वारा केम्पापुरा अग्रहारा में किया गया था। विजयनगर विशिष्ट अतिथि थे, मारुति मेडिकल के गोसेवक महेंद्र मुणोत ने माता जी की पूजा कर आशीर्वाद लिया तथा अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपनी सनातन संस्कृति पर गर्व है। मुणोत ने जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की। आयोजकों ने अतिथियों का सम्मान किया। ये यभी उक्त जानकारियां बेंगलुरु से भूपेन्द्र एस. भानावत ने 'जिनागम' पत्रिका को भेजी है।

जैन परिचय सम्मेलन में ७०० युवक-युवतियों की उपस्थिति रही

मुंबई: श्री मुंबई दिगम्बर जैन सेवा संघ–मुंबई द्वारा आयोजित २१वां विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन अत्यंत सफलता पूर्वक सानंदापूर्वक सम्पन्न हुआ। समाजजनों की अपार उपस्थिति और सक्रिय सहभागिता ने इस आयोजन को विशेष और यादगार बना दिया।

बता दें कि वैवाहिक युवा परिचय सम्मेलन आज समाज की बेहद जरूरत है, इसे देखते हुए हॉल खचाखच भरा हुआ था, करीब हजार से भी ज्यादा श्रावक- श्राविकाओं की उपस्थिती रही और करीब ७०० युवक-युवतियों ने पंजीकरण करवाकर ऑनलाइन और ऑफलाइन के माध्यम से भाग लेकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। युवक-युवतियों ने अपना परिचय देते वक्त मंच को भाव विभोर कर दिया। विधायक व मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा, एस.पी. जैन प्राईड समूह, गणपत कोठारी, विकाश सेठी, मनोज राममोहन छाबड़ा, सुरेंद्र पंड्या, किशोर काका सर्राफ, कमल कासलीवाल, मनीष गंगवाल, सुरेश पहाड़िया, सतीश दोशी, सी.ए. सुरेश सेठी आदि की ससम्माननीय उपस्थिति रही। मंच उद्घाटन मनोज राममोहन छाबड़ा व दीप प्रज्वलन विकास सेठी ने किया।

कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान से की गई, तत्पश्चात मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा का संबोधन व कोषाध्यक्ष वर्धमान कासलीवाल ने संघ की गतिविधियों का ब्यौरा दिया। संजय राजा जैन ने बहुत ही सुंदर व प्रभावपूर्ण तरीके से मंच का संचालन किया, तत्पश्चात 'परिचय सम्मेलन' की पुस्तिका का विमोचन विमल जैन (संघी) और एसपी जैन द्वारा किया गया। संघ के महामंत्री कमल गंगवाल ने अपने विचार सबके समक्ष रखें। सहमंत्री मनीष जैन (छाबड़ा) ने ऑनलाइन व ऑफलाइन उम्मिदवारों को मोबाइल एप्लीकेशन के फायदे बताए और परिचय देने के लिए स्टेज पर आमंत्रित किया। श्वेता चांदीवाल और साधना मदावत ने सभी युवक-युवतियों का परिचय दिया। संघ द्वारा सुबह के नाश्ते और भोजन की अच्छी व्यवस्था रखी गई थी।

- मनिष जैन (छाबड़ा), मुंबई मो. ९८२१८८४०४४

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
परस्परोपग्रहो जीवानाम्
Adv. Narendra Gandhi
Mob: 9425108224
37, Jawahar Marg, Opposite Agriculture Produce Market,
Neemuch Road, Near State Bank Of India, Jawad,
Neemuch, Madhya Pradesh, Bharat- 458330
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

।। ॐ अर्हम् ।।
आचार्य महाप्रज्ञ जी
अहिंसा के महान प्रचारक
महाप्रज्ञ जी के
जन्म पर्व पर लाखों बधाईयाँ
UMC technologies
processing made simpler
S. L. Dugar, F.C.A.
Managing Director
UMC Technologies (P) Ltd.
(An ISO 9001:2008 ISO 27001 NSIC Regd CRISIL Verified Company)
Dugar Charitable Trust
Udasar, Bikaner, Rajasthan - 334022
Phone 0151-2752242 Mob. : 98310 12776
Ph. No. 033-2289 2659 Fax : 033-2289 2659
e-mail : sldugar@umctech.com website : www.umctech.in

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में आचार्यश्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की चौथी पुण्यतिथि मनाई गई

राजगढ़/धार: श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) श्री मोहनखेडा तीर्थ के तत्वाधान में गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का चतुर्थ पुण्यदिवस एवं ६८ वां जन्मदिवस गुणानुवाद सभा के साथ भावांजलि व पुष्पांजलि अर्पित करके मनाया गया। दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पाट परम्परा के अष्ठम पट्टधर गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का चतुर्थ पुण्यदिवस व ६८ वां जन्मदिवस गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री रुपेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. व आचार्यश्री जयानन्दसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती वरिष्ठ मुनिराज श्री विराग्यनन्दविजयजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीवृंदों की निश्रा में गुणानुवाद सभा हुई।

गुणानुवाद सभा में तीर्थ के मेनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ, सहयोगी अरविंद जैन, राजगढ़ श्रीसंघ से सेवन्तीलाल मोदी, राजेन्द्र खजांची, बसन्तीलाल मेहता, पारस कांकरिया, नरेन्द्र भण्डारी, दिलीप नाहर, सुनिल फरबदा, सुनिल जैन सहित कई वरिष्ठ समाजसेवी व तीर्थ के महाप्रबंधक अर्जुनप्रसाद मेहता सहित स्टाफ ने आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर माल्यार्पण कर धूप, दीप प्रज्वलित कर भावांजलि अर्पित की गई।

गुणानुवाद सभा में महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में सामुहिक सामायिक की गई, गुणानुवाद सभा के पश्चात् स्थानीय गौशाला में गायों को गुड़, लापसी परोसी गई एवं स्थानीय चिकित्सालय में व कंचन हास्पीटल में मरीजों को विस्कीट फल वितरित किये गये। गुणानुवाद सभा में पधारे हुए सभी गुरुभक्तों के लिये नवकारसी एवं स्वामीभक्ति का आयोजन श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट मोहनखेड़ा द्वारा किया गया।

शादी की सालगिरह मनाई अनोखे तरीके से...

इंदौर-णमोकार तीर्थ: एक और जहाँ लोग शादी की सालगिरह में रिसोर्ट में या किसी पिकनिक स्पाट पर चकाचौंध के बीच मनाना पसंद करते है वहीं इंदौर के सौ. श्रेया धवल सेठी ने अपनी शादी की सालगिरह अनोखे तरीके से मनाई।

श्रेया ने शादी की १० वीं सालगिरह के दिन अपने गुरु प.पू. आचार्य श्री देवनन्दिजी गुरुदेव को 'णमोकार तीर्थ' पर लगभग ८०० वर्ष पुरानी एक प्राचीन प्रतिमा भेंट की और उसके लिए उनके पति, बच्चे, सास, ससुर सहित पूरा परिवार गुरुचरणों में पहुंचा और इंदौर के पानेगांव क्षेत्र पर अलग-थलग पड़ी यह प्रतिमा गुरुदेव को भेंट की।

गौरतलब है कि श्रेया 'णमोकार तीर्थ' के अध्यक्ष नीलम अजमेरा की सुपुत्री हैं। श्रेया का कहना है कि इसके लिए उन्हें गुरुदेव से प्रेरणा मिली, कुछ वर्ष पहले गुरुदेव के कुछ शब्द उनके कानों पर पड़े थे, जिसमें उन्होंने कहा था कि एक उत्कृष्ठ श्रावक वही कहलाता है, जो अपने जीवन में ३ काम कर लेता है, पहला काम एक तीर्थंकर प्रतिमा के लिए निर्माण या दान देना, दुसरा सिध्दचक्र विधान में सौधर्म इंद्र बनना, तिसरा सम्मेदशिखरजी की वंदना करवाना, बस उस दिन से उन्होंने ठान लिया कि वो अपने जीवन में ये ३ काम जरुर करेंगी और लग गईं काम पर, ६ माह से वो इसकी तैय्यारी कर रही थी, उन्होंने अनेकों जगह पर प्रतिमा ढूंढी, लेकिन कहीं मिली नहीं, एक दिन इंदौर के पास पानेगांव क्षेत्र पर एक नदी के किनारे यह प्रतिमा दिखी, वहां समाज ना होने से प्रतिमाजी की दैनंदिन देखरेख नही हो पा रही थी, उन्होंने तुरंत क्षेत्र कमिटी से संपर्क किया उनकी रजामंदी प्राप्त की, और पूरे विधी विधान के साथ इस प्रतिमा को अपनी शादी के सालगिरह के दिन 'णमोकार तीर्थ' पर लेकर आये, श्रेया जी आज बहुत खुश हैं कि इस प्रतिमा का अब पूरा रखरखाव अच्छे तरीके से होगा, जहां गुरुदेव के सानिध्य में उसका भव्य पंचामृत अभिषेक संपन्न हुआ, गुरुदेव ने उनके इस कार्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें आगामी जीवन के लिए मंगल आशीर्वाद दिया।

- एम.सी. जैन, चिकलठाणा

जिनागम सामाजिक एकता का आदर्श

- राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी

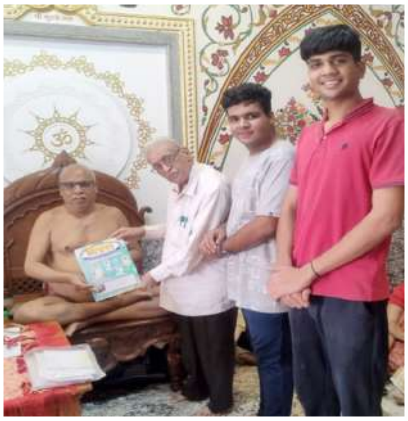

चिकलठाणा, महाराष्ट्र: भारतवर्ष के प्रख्यात हिंदी मराठी लेखक साप्ताहिक 'जैन गजट' के राष्ट्रीय प्रतिनिधि एम् सी जैन, इंजी. प्रतीक दिनेश पाटनी एवं इंजी. वरुण ने राष्ट्रीय संत प्रज्ञाश्रमण 'णमोकार तीर्थ' प्रणेता सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी को मई २०२५ का 'जिनागम' अंक समर्पित किया। अंक की उत्कृष्ट छपाई, हर पृष्ठ विचारणीय लेख तथा श्वेताम्बर-दिगम्बर भेदभाव ना करते हुए अखंड समाज को देखते हुए 'जिनागम' का कार्य निश्चित प्रशंसनीय है। 'जिनागम' सामाजिक एकता आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत करता है, ऐसे भावपूर्ण विचार राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य देवनंदी जी ने व्यक्त किया। - **एम.सी. जैन, पत्रकार**

जैन समाज के सशक्तीकरण की दिशा में नई पहल, कई मुद्दों पर चर्चा

मुंबई: जैन समाज के आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में सरकार लगातार कार्य कर रही है, जैन समाज के सर्वांगीण विकास के लिए हर संभव सहयोग देने का आश्वासन महाराष्ट्र के कौशल विकास मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने दिया, उनके हाथों मल्होत्रा हाउस में जैन अल्पसंख्यक आर्थिक विकास महामंडल के केंद्रीय कार्यालय का उद्घाटन किया गया। समारोह में जैन समाज के विकास की दिशा में महामंडल की भूमिका पर विस्तार से चर्चा हुई। श्री लोढ़ा ने कहा 'जैन समाज के उत्थान और प्रगति के लिए शासन कटिबद्ध है। महामंडल के सुचारू और प्रभावी संचालन के लिए आवश्यक सभी संसाधनों की पूर्ति की जाएगी।' महामंडल के अध्यक्ष ललित गांधी ने कहा कि वे अब तक २६ जिलों का दौरा कर २२ जिलों में कार्यालयों का उद्घाटन कर चुके हैं, उन्होंने जैन समाज के लोगों तक महामंडल की विभिन्न योजनाएं पहुंचाने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाया।

केंद्र सरकार से भी मिलेगा सहयोग: राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास और वित्त निगम की अध्यक्ष आभा रानी सिंह ने कहा कि जैन अल्पसंख्यक आर्थिक विकास महामंडल को केंद्र सरकार की ओर से पर्याप्त वित्तीय सहयोग मिलेगा।

२७ जून
दिगम्बर मुनिश्री प्रमाणसागर जी के
जन्म पर्व पर कोटि-कोटि वदंन्!
Prakashchand Chhabra Jain Babita Chhabra Jain
Mob.: 9324004257
Ahinsha Beverages Pvt.Ltd.
1201, A-Wing, Oberoi Garden, Thakur Village,
Kandivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400101
Telephone: 022-2885 3953, 2854 5715

।। ॐ अर्हम् ।।
अहिंसा के महान प्रचारक महाप्रज्ञ जी के
जन्म पर्व पर लाखों बधाईयाँ
आचार्य महाप्रज्ञ जी
Rohit Kathotia
Mob: 98841 28485

Since 1978
Rachana GOLD
WIRES & CABLES
RACHANA CABLES
Old #155 / New #180, Govindappa Naicken St,
1St Floor, Chennai, Tamil Nadu - 600 001
Ph: +91 44 4262 1314, 2536 9656

जिनवाणी का स्वाध्याय, आत्मा को शांति और स्थिरता प्रदान करता है

- अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज

मुजफ्फरनगर: साधना महोदधि अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज ने विशाल धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा -

'श्रुतं मे भगवान्मुखात्, तेन श्रुतेन मोक्षमार्गो ज्ञातव्यः'

अर्थात - मैंने यह श्रुतज्ञान भगवान के मुख से प्राप्त किया है, इसी श्रुति के द्वारा मोक्षमार्ग को जाना जा सकता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के पावन अवसर पर हम सब श्रुतपंचमी महापर्व का उल्लासपूर्वक आयोजन करते हैं, यह पर्व न केवल ज्ञान की पवित्रता का प्रतीक है, बल्कि यह उस अमूल्य धरोहर का उत्सव भी है जो हमें तीर्थंकर की वाणी के रूप में प्राप्त हुई। जिनवाणी माता महावीर स्वामी के निर्वाण (मोक्षगमन) के पश्चात उनकी दिव्यध्वनि से प्राप्त शासन वाणी का संरक्षण अत्यंत आवश्यक था, इस महान कार्य को सम्पन्न किया आचार्य पुष्पदंत और भूतबलि स्वामी ने, जिन्होंने षट्खंडागम नामक प्रथम श्रुतग्रंथ की रचना की। 'जिनवाणी' के प्रथम लेखन की पूर्णता ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को हुई थी, तभी से यह दिन 'श्रुतपंचमी' के रूप में एक विशेष पर्व बन गया, यह पर्व केवल ज्ञान का उत्सव नहीं, अपितु मोक्षमार्ग का प्रवेश द्वार है।

'ण मं कुणइ अप्पाणं, जहा मं समणो तित्थयराओ
ण सेसइ संसारं, जहा मं समणो तित्थयराओ'

कोई भी जीव आत्मकल्याण वैसा नहीं कर सकता जैसा तीर्थंकर भगवान की वाणी बताती है।जिनवाणी का अध्ययन केवल ज्ञानवर्धन नहीं करता, यह चारित्र के पालन की प्रेरणा देता है, जिनमार्ग की जानकारी के बिना आत्मशुद्धि संभव नहीं और जिनवाणी ही वह माध्यम है जिससे यह ज्ञान प्राप्त होता है।

आज के आपाधापी भरे जीवन में जहाँ मानसिक तनाव, असंतोष और उलझनें घर कर चुकी हैं, वहाँ 'जिनवाणी' का स्वाध्याय आत्मा को शांति और स्थिरता प्रदान करता है, यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि सांसारिक चकाचौंध से हटकर आत्मकल्याण का मार्ग ज्ञान और आचरण से ही संभव है।

श्रुतपंचमी का पर्व एक आत्मावलोकन का दिन है क्या हम जिनवाणी का नियमित स्वाध्याय करते हैं? क्या हमारे घर में शास्त्रों का यथोचित सम्मान होता है? क्या हम अपने बच्चों को 'जिनवाणी' का महत्व समझाते हैं?

पूजन एवं आराधना इस दिन 'जिनवाणी' माता की भक्ति भाव से पूजन, शास्त्रों का अभिषेक, नव वस्त्रों से सज्जा, एवं वैयावृत्ति (संरक्षण व मरम्मत) का कार्य किया जाता है, कई स्थानों पर प्रभावना यात्रा, श्रुतज्ञान प्रतियोगिता एवं भजन संध्या जैसे आयोजनों द्वारा पर्व को गरिमा प्रदान की जाती है।

'श्रुत ज्ञानं न विना मोक्षो, न मोक्षो यदि मानव!
श्रुतं तस्मात् पूज्यतमं, स्वाध्यायः सर्वदा भवेत'

श्रुतज्ञान के बिना मोक्ष नहीं, इसलिए 'जिनवाणी' का पूजन और स्वाध्याय सदा होना चाहिए।

श्रुत आराधना ही आत्मकल्याण का मूलः हमने मनुष्य जीवन पाया है,, यह अत्यंत दुर्लभ है, यदि इस पर्याय में भी हम 'जिनवाणी' का स्वाध्याय नहीं करेंगे तो फिर कब? आइए! इस श्रुतपंचमी पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम नियमित रूप से स्वाध्याय करेंगे,अपने बच्चों को शास्त्रों से जोड़ेंगे, जिनालय में विराजमान शास्त्रों की सेवा करेंगे,और 'जिनवाणी' माता के प्रति अपार श्रद्धा रखेंगे।

श्रुतपंचमी महापर्व की सभी को अनंत शुभसंशाओं सहित आशीर्वाद!

- नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल
औरंगाबाद

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

NEW PRODUCT

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg,
Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT
SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Samrat Jewellers

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन **पंकज नाहर जैन**

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

भंवरलाल पगारिया जैन

वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

।। ॐ अर्हम् ।।

आचार्य भिक्षु वर्तमानाचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
चरणों में कोटि - कोटि वंदन

पुत्र
दिपक दुधोड़िया
प्रकाश दुधोड़िया
विकास दुधोड़िया

मगन सिंह दुधोड़िया (छापर-शिलाँग)
छापर-शिलाँग तेरापंथ सभा पूर्व अध्यक्ष
भ्रमणध्वनि : 94361 64725

M.K. Hardware
Deals in All Type
of Building Materials
Luckier Road, Shillong,
Meghalaya, Bharat-793002
Mob. : 9436303878

G.D. Hardware
Authorized Dealer - Star Cement,
Dalmia Cement & Cell Steel
Luckier Road, Shillong,
Meghalaya, Bharat- 793002
Mob: 9436334751

M.S. Trading
Authorized Dealer Taj Cement
Mittal Gold Steel, Luckier Road
Shillong, Meghalaya, Bharat- 793002
Mob: 9436118490

SILVERSTONE CARRIER
Fleet Owner & Transporter
Luckier Road, Shillong,
Meghalaya, Bharat- 793002
Mob: 7005536387

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

अहिंसा के महान प्रचारक महाप्रज्ञ जी के
जन्म पर्व पर लाखों बधाईयाँ

Sobhachand Bhansali
Mob: 9831152942

Deepak Bhansali
Mob: 9831152941

Finance Broker

#4 A, N. C. Dutta Sarni, 2nd Floor, Kolkata,
West Bengal, Bharat-700001
Ph.: 033-22315341

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

प्रकाशचंद जैन

संरक्षक तेरापंथ सभा गुरुग्राम
हिसार निवासी-गुरुग्राम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८११५९२११३

प्रकाशचंद जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि मेरी नजरों में आचार्य श्री स्वामी विवेकानंद जी की ही तरह बड़े ज्ञानशील और विद्वता के धनी थे, उनके बारे में जितना कहा जाए उतना कम होगा, उन्होंने ना सिर्फ जैन समाज, अपितु संपूर्ण मानव समाज के उत्थान के लिए कई कार्य किए, कई रचनाएं रची हैं, जिनमें प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान जो की जीवन के सही मूल्य को प्रतिपादित करते हैं, जो कि योग ध्यान से प्रेरित है, उनके दर्शन का अवसर हमें कई प्राप्त हुआ है, एक बार तो हमने उनके सम्मुख मंगल पाठ भी किया। प्रेक्षा ध्यान को अपनाकर मैंने अपने जीवन में बहुत ही सकारात्मक बदलाव देखे हैं, उनके प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान का कई विद्यालय और महाविद्यालय द्वारा भी अनुसरण किया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों को लाभ मिले, यह हमारा सौभाग्य की ऐसे आचार्य श्री के सानिध्य का हमें अवसर कई बार प्राप्त हुआ, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना की 'एकता' तो समाज के लिए बहुत जरूरी है। आचार्य श्री तुलसी ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाए थे, सर्वप्रथम हमारी 'संवत्सरी' एक हो जाए, तो ही हम 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ रही है, ज्ञानशाला के माध्यम से युवाओं को जोड़ा जा रहा है, क्योंकि आज की युवा पीढ़ी कुरीतियों के कलंक से जुड़ गई है, उन्हें धर्म समाज से जोड़ना जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'! भारत ही हमारे देश का वास्तविक और ऐतिहासिक नाम है।

७५ वर्षीय प्रकाशचंद जी मूलत: हरियाणा में स्थित 'हिसार' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, कई वर्षों से आप गुरुग्राम में बसे हुए हैं और कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। पूर्व में तेरापंथ सभा गुरुग्राम के अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में संरक्षक की भूमिका निभा रहे हैं, आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल, सीरियारी के कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

पूनमचंद सुराणा

व्यवसायी व समाजसेवी
पड़िहारा निवासी-कानपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३९०३७०११

पूनमचंद जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री तेरापंथ धर्म संघ के दसवें आचार्य थे, जिन्होंने आध्यात्मिक साधना को सर्वोपरि माना, उनके दर्शन से एक अद्भुत शांति की प्राप्ति होती थी, उनका आभामंडल, उनकी मुस्कान, आंखों की चमक देखते ही बनती थी, उनकी वक्तव्य शैली और किसी भी समस्या के निवारण को समझाने का तरीका अद्भुत था, उन्होंने 'प्रेक्षा ध्यान' के माध्यम से आत्मा से परिचय कैसे हो व योग साधना पर बल दिया, जिसका लाभ लाखों लोगों ने उठाया, हमें गर्व है कि ऐसे आचार्य श्री का हमें सानिध्य प्राप्त हुआ, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है की 'एकता' तो हर समाज के लिए जरूरी होती है हमारा जैन समाज संख्या में कम है और यदि हम इसी तरह पंथों में बटे रहेंगे तो हमारा अस्तित्व खत्म हो जाएगा, इसलिए जैन समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है पर यह असंभव सा लगता है, क्योंकि सभी अपनी धारणाएं लेकर चल रहे हैं इसलिए सभी फिरकों को एकत्रित करना मुश्किल सा लगता है, पर प्रयास किया जाना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से पहले की अपेक्षा अधिक जुड़ी है, वह विभिन्न क्रियाकलापों में सहभागी रहती है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन मिलते रहने की आवश्यकता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम,एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

पूनमचंद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'पड़िहारा' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'पड़िहारा' में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा कोलकाता से ग्रहण की। कोलकात्ता में भी साधु-साध्वियों के चातुर्मास में सक्रिय रहते हैं। १९९५ से आप 'कानपुर' में बसे हैं और टेंट व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। कानपुर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रहे हैं। लायंस क्लब कानपुर के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

उज्जैन कुमार मालू

वरिष्ठ उपाध्यक्ष नेपाल बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा
बीकानेर निवासी-भागलपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४३१२१४५३३

उज्जैन जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे में कहना छोटा मुंह बड़ी बात होगी, उनके बारे में जितना कहा जाए उतना कम ही है, उन्होंने अपनी योग साधना के माध्यम से लोगों में इसका महत्व प्रदान किया, उनकी स्पष्टवादिता और हर विषय पर चिंतन उनकी विशेषता थी, वे हर बात को प्रभावपूर्ण और विस्तार से समझाते थे, प्रेक्षाध्यान सूत्र के माध्यम से उन्होंने जन-जन में आध्यात्मिकता के महत्व को प्रतिपादित किया, यह हमारे लिए गौरव की बात है कि ऐसे आचार्य श्री के दर्शन लाभ हमें प्राप्त हुए। आचार्य श्री के चरणों में कोटि कोटि नमन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से हमारे समाज में 'एकता' की बहुत जरूरत है, पर हमारा समाज पंथ और संप्रदायों में बंटा हुआ है,हम आपस में ही भिड़ रहे हैं, हमारी जनसंख्या वैसे ही कम है साथ ही बहुत से लोग अपने नाम के साथ 'जैन' नहीं लगाते, जिससे हमारी वास्तविक संख्या का पता नहीं चल पाता, इसीलिए सर्वप्रथम सभी को अपने नाम के साथ 'जैन' अवश्य लगाना चाहिए, तभी हमारी वास्तविक संख्या का ज्ञान होगा। जैन समाज जबकि सबसे प्रभावशाली समाज है, सबसे अधिक टैक्स भरने वालों में जैन समाज की संख्या है, व्यापार के क्षेत्र में 'जैन' सबसे आगे हैं, इन सबके बावजूद पंथों में बंटे होने के कारण हमें राजनीतिक महत्व नहीं मिल पा रहा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से कम ही जुड़ी है, वह अपने जीवन शैली को अधिक महत्व दे रही है, शिक्षा व नौकरी के कारण वे परिवार व समाज से दूर होते जा रहे हैं, जिस कारण उनका धर्म और समाज से जुड़ाव कम हो रहा है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत'हमारे देश का वास्तविक नाम है, हमारी पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

उज्जैन जी मूलतः राजस्थान स्थिति 'बीकानेर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'भागलपुर' बिहार में संपन्न हुई है, यहां आप भागलपुरी सिल्क कपड़ा उत्पादन के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा छत्तीसगढ़ संभाग के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स में जनसंपर्क अधिकारी, लायंस क्लब के कार्यकारिणी सदस्य व भारत विकास परिषद के उपाध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

रवि दक

कार्यकारिणी सदस्य तेरापंथ सभा रतलाम
देवगढ़ निवासी-रतलाम प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२५३७९३७१

रवि जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के संदर्भ में कहना छोटा मुंह बड़ी बात होगी, वे एक महान दार्शनिक, चिंतक, योगी विचारक और लेखक थे, आचार्य श्री ने जैन धर्म को जिस स्वरुप में व्यक्त किया, वह आज के संदर्भ में बहुत ही सार्थक है, युग के साथ जैन धर्म में जो परिवर्तन होने चाहिए,उसको बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया है। 'प्रेक्षा ध्यान' जैन योग साधना पद्धति है, जैन धर्म का मूल योग साधना है, जो धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा था, आचार्य श्री ने 'प्रेक्षा ध्यान' के माध्यम से उसे पुनर्स्थापित किया,जिसका लाभ कई लोगों ने उठाया है। आचार्य श्री के दर्शन मात्र से मन प्रफुल्लित हो जाता था, उनकी आभा मंडल में पवित्रता व सकारात्मकता का अनुभव होता था, उनके जीवन में क्रोध लेशमात्र भी नहीं था, बहुत ही सरलमना महापुरूष थे, उनके जन्मोत्सव पर उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है की 'एकता' तो हमारे जैन समाज के लिए आज बहुत ही जरूरी हो गई है, पर समाज में कट्टरता और अहंकार की भावना के कारण हम अपने मूल को भूल रहे हैं, हम परंपराओं को ही सब कुछ मान लेते हैं,जबकि जैन धर्म सत्य की खोज पर आधारित है। संप्रदाय नहीं संप्रदायवाद खराब है, हम सत्य हैं, अन्य झूठ यह सोच नहीं रहनी चाहिए, सभी संप्रदाय और गुरु भगवंतों का समान महत्व व आदर होना चाहिए, तो ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

धर्म में समय के अनुरूप परिवर्तन न होने के कारण युवाओं में अपने धर्म और समाज के प्रति उदासीनता आ गई है, मूल अवधारणा को सुरक्षित रखते हुए धर्म में परिवर्तन जरूरी है, तभी युवा वर्ग अपने धर्म समाज से जुड़ेगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम और पहचान 'भारत' ही रहना चाहिए, इस राष्ट्रीय अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं, इंडिया तो ब्रिटिशर्स द्वारा थोपा गया नाम है, यह हमारी पहचान नहीं बन सकता, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

रवि जी मूलत: राजस्थान में स्थित 'देवगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के 'रतलाम' में संपन्न हुई है। आपका परिवार यहां चार-पांच पीढ़ियों से बसा हुआ है, यहां आप साड़ियों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में तेरापंथ सभा युवक परिषद के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में तेरापंथ सभा कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

नरेंद्र दुगड़

वरिष्ठ सलाहकार छत्तीसगढ़ चैंबर्स ऑफ कॉमर्स
सरदारशहर निवासी-रायपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२५२०६५९५

नरेंद्र जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री अपने नाम के ही अनुरूप एक महान साधक, महान विचारक और विद्वता के धनी थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का अपने गुरु गणाधिपति श्री तुलसी जी के प्रति समर्पण अतुलनीय था, वे महान दार्शनिक, साहित्यकार, विचारक एवं करुणाशील थे। क्रोध पर विजय प्राप्त थी, प्रतिदिन कुछ नया ज्ञान-विज्ञान जानने के प्रति हर पल उत्सुक रहते थे। प्रवचन शैली आकर्षक थी, उनका ध्यान साधना के प्रति विशेष लगाव था, मेरा तो यह कहना है कि उनकी विद्वता का हम भारतवासियों ने सही से मूल्यांकन नहीं किया जो की होना चाहिए, यदि वे विदेश में होते तो उन्हें अनेक नोबल पुरस्कार का सम्मान प्राप्त होता। आचार्य श्री विद्यालय नहीं गए फिर भी उनका हर विषय वस्तु का गहराई तक ज्ञान था, उनकी बुद्धि इतनी प्रज्ञावान थी कि उनके पास हर शब्द, हर वाक्य का सटीक जवाब होता था, उनकी साधना की ऊंचाई गजब की थी, उनकी पुस्तक 'श्रमण महावीर' में उन्होंने अपनी अद्भुत लेखनी का परिचय दिया है, उन्होंने 'प्रेक्षा ध्यान' के माध्यम से जग को अशांति से शांति की ओर जाने हेतु प्रेरित किया, तनाव मुक्ति का प्रयोग दिया, सकारात्मक सोच के साथ प्रत्येक क्षण आत्मा के उर्ध्वारोहण में समय बिताना, आदि का उन्होंने अपनी पुस्तकों के माध्यम से समझाया है, जिसका लाखों लोगों ने लाभ भी लिया है, गुरु के प्रति कितना समर्पण होना चाहिए, कितना विवेक होना चाहिए इसका प्रत्यक्ष उदाहरण थे आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, जिनके बारे में जितना कहा जाए उतना कम ही होगा। उनके चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है की 'एकता' तो हमारे जैन समाज के लिए बहुत जरूरी है और आज जो परिस्थितियां बनी हैं, उसमें यह मुश्किल लगता है, यह कार्य संभव होगा हमारे साधु-संतों के माध्यम से, उनके द्वारा किए गए प्रयासों से ही 'जैन एकता' की ओर हम बढ़ सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ रही है, उनकी बौद्धिक स्थिति को अपनाते हुए उचित मार्गदर्शन के माध्यम से युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ा जा सकता है, क्योंकि आज की युवा पीढ़ी प्रमाण मांगती है, यदि हम उन्हें प्रमाणित कर दें कि जैन धर्म के सिद्धांत वैज्ञानिक हैं तो वह अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़े रहेगें।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, पर यह हमारी राजनीतिक निष्क्रियता है कि आज भी हमारा देश अंग्रेजों द्वारा थोपे गए नाम INDIA से पूरे विश्व में जाना जाता है।

नरेंद्र जी मूलतः राजस्थान के 'सरदारशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्राथमिक शिक्षा 'बनारस' में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा अपने कोंडागांव छत्तीसगढ़ में ग्रहण किया। छत्तीसगढ़ के 'रायपुर' में बसे हुए हैं और डायमंड व जेम्स के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी विशेष सक्रिय रहते हैं। अपने माता-पिता के आशीर्वाद से आपने 'जैन गर्ल्स हॉस्टल' का निर्माण किया, जो पूर्णतः सुविधापूर्ण है। अखिल भारतीय तेरापंथ महासभा के कार्यकारिणी सदस्य रहे हैं। रायपुर तेरापंथ सभा के लगातार ११ वर्षो तक सचिव रहे, समग्र जैन समाज द्वारा आयोजित महावीर जन्म कल्याणक के आयोजन समिति में दो बार प्रमुख पदों पर रहे हैं। भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक संस्था में से एक 'छत्तीसगढ़ चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स' के मंत्री और उपाध्यक्ष पद पर सक्रिय रहे, वर्तमान में वरिष्ठ सलाहकार की भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत! **-जिनागम**

नरेंद्र गौशाल

पूर्व कोषाध्यक्ष दिल्ली तेरापंथ सभा
राजलदेसर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः९८११११११६१२

नरेंद्र जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक एक योगी पुरुष थे, अपने योग साधना से उन्होंने जो प्राप्त किया उसे जनकल्याण को समर्पित किया, महाप्रज्ञ जी ने धर्म व समाज के बंधन में ना पड़ते, हुए भारतीय समाज के कल्याण का प्रयास किया, इसलिए उनके मानने वालों में जैन ही नहीं अन्य समाज के लोग भी शामिल हैं। उन्होंने कई अवधारणा दिए, जिनमें से प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान आज के परिपेक्ष में बहुत ही सार्थक हैं। आचार्यश्री की आभामंडल से हमेशा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती थी, उनके सानिध्य में जाकर सारी चिंताएं मिट जाती थी, यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसे आचार्य श्री का हमें दर्शन लाभ प्राप्त हुआ, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता में बड़ी शक्ति होती है, यह हम बचपन से ही सुनते आ रहे हैं, बंद मुट्ठी लाख की खुल जाए तो खाक की, इस तरह हमारे समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, अन्यथा हमारे धर्म और समाज का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति जागरुक है पर उनका धर्म को देखने का नजरिया अलग है, चली आ रही परंपराओं और मान्यता से दूर, धर्म के महत्व को समझने में लगे हैं, इसमें हम युवाओं को मात्र दोष नहीं दे सकते हैं, जब हमने ही हमारी भाषा, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन को छोड़ दिया है, तो हम युवाओं से क्यों आशा रखें कि वे अपने धर्म समाज संस्कृति से जुड़े रहें।

शेष पृष्ठ ३७ पर...

पृष्ठ ३६ से ... 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम हर भाषा में 'भारत' ही रहना चाहिए।

नरेंद्र जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'राजलदेसर' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई हैं। १९९९ से आप दिल्ली में बसे हैं और स्टॉक ब्रोकर्स के कार्य से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में दिल्ली तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य हैं, भारत विकास परिषद से भी जुड़े हैं। जय भारत! **-जिनागम**

संतों को लेकर संदिग्ध दुर्घटनाओं के खिलाफ दिखा जैन समाज में आक्रोश

मुंबईः राजस्थान में विहार करते समय जैन संतों की लगातार हो रही दुखद और संदिग्ध दुर्घटनाओं ने जैन समाज की अंतरात्मा को झकझोर कर रख दिया है, इन्हीं हादसों के विरोध में दक्षिण मुंबई की सड़कों पर मुंबई जैन महासंघ ने महारैली आयोजित की, इसमें जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों और हजारों की संख्या में जैन समाज के लोगों ने हिस्सा लिया, वीपी रोड से शुरू हुई इस महारैली के जैन समाज के लोगों ने हाथों में तख्तियां लेकर इंसाफ की मांग करते हुए मार्च किया, वीपी रोड से आरंभ होकर कालबादेवी स्थित प्रतिष्ठित गोड़ीजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर पर धर्मसभा में परिवर्तित हुई, रैली में समाज के सभी वर्गों से भारी सहभागिता रही।

आचार्य अक्षयचंद्र सागर सूरि, आचार्य नयपद्म सागर सूरि, आचार्य राजपरम सूरि समेत अन्य संतों ने अपना आक्रोश व्यक्त किया, समाज के लोगों ने कहा, 'हमने अपने संतों को अकारण खोया है, यह लगातार होती दुर्घटनाएं एक गहरी साजिश का हिस्सा लगती हैं, इसलिए सरकार और प्रशासन को पूरे प्रकरण की जांच करनी चाहिए, ताकि ऐसी घटनाओं पर रोक लग सके।' दक्षिण मुंबई की सड़कों पर मुंबई जैन महासंघ द्वारा आयोजित महारैली में जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों और जैन समाज के लोगों ने लिया, हाथों में तख्तियां लेकर इंसाफ की मांग करते हुए किया। कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने भी सभा में दुख जताते हुए कहा कि उन्होंने फोन पर राज्यपाल से बात की है, जिन्होंने आश्वासन दिया कि जैन संतों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्राथमिकता होगी और भविष्य में ऐसी घटनाएं दोहराई ना जाएं, इसके लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।

।। ॐ अर्हम् ।।
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व पर
चरणों में कोटि - कोटि वंदन
आचार्य महाप्रज्ञ जी
Suresh Mahnot Mohit Mahnot Vikas Mahnot
VJ
VARDHAMAN JEWELLERS
Bullions: Gold & Silver
#835/6, Adinarayan Swamy Complex,
(Below Jewellers Association)
Nagarathpet, Bengaluru, Bharat-560002
Ph: 080-40981080
Mob: 9663745808/ 9845054871/ 9901269007

।। ॐ अर्हम् ।।
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के
जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में
कोटि - कोटि वंदन
आचार्य महाप्रज्ञ जी
Narendra Goushal
Managing Director
Member : NSE, BSE & NSDL, CDSL & CIRL
Mob: 98111 11612
ARCH CREATING VALUES
ARCH Finance Ltd
81, 1st Floor, Darya Ganj, New Delhi, Bharat- 110002
E-mail: narendra@archfin.com
Website: www.archfin.com
Fax: 011-23245077
C: 011-43710021/22 B: 011-43710000

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC
www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

VISHAL MEGA MART
NSE
VISHAL MEGA MART
10:02
WELCOME
WAAREE
10:16
NSE
10:00
Organics
BSE
10:01
BSE
BIKAJI
YATHARTH
BSE
WELCOMES YOU

**~~~ Our Services ~~~**

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com
Web: www.intensivefiscal.com

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

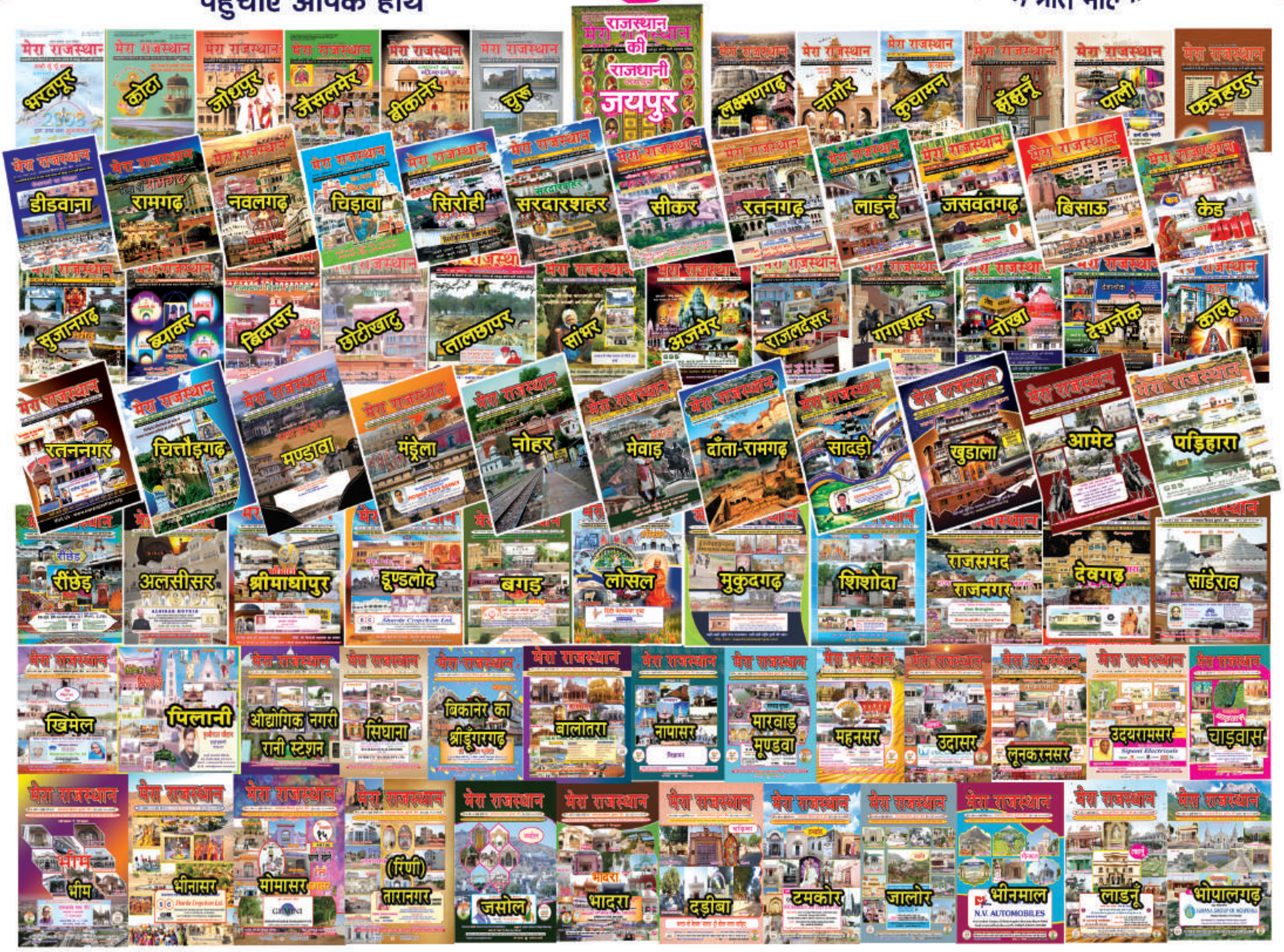
मेरा राजस्थान
भरतपुर
कोटा
जोधपुर
जैसलमेर
बीकानेर
चूरू
राजस्थान की राजधानी जयपुर
लक्ष्मणगढ़
नागौर
कुचामन
झुंझुनूँ
पाली
फतेहपुर
डीडवाना
रामगढ़
नवलगढ़
चिड़ावा
सिरोही
सरदारशहर
सीकर
रतनगढ़
लाडनूँ
जसवंतगढ़
बिसाऊ
केड
सुजानगढ़
ब्यावर
बिदासर
छोटीखाटू
तालछापर
सांभर
अजमेर
राजलदेसर
गंगाशहर
नोखा
देशनोक
कालू
रतननगर
चित्तौड़गढ़
मण्डावा
मंड्रेला
नोहर
मेवाड़
दाँता-रामगढ़
सादड़ी
खुडाला
आमेट
पड़िहारा
रींछेड़
अलसीसर
श्रीमाधोपुर
डुण्डलोद
बगड़
लोसल
मुकुंदगढ़
शिशोदा
राजसमंद राजनगर
देवगढ़
सांडेराव
खिमेल
पिलानी
औद्योगिक नगरी रानी स्टेशन
सिंघाना
बिकानेर का श्रीडूंगरगढ़
बालोतरा
नापासर
मारवाड़ मूण्डवा
महनसर
उदासर
लूनकरनसर
उदयरामसर
चाड़वास
भीम
भीनासर
मोमासर
(रिणी) तारानगर
जसोल
भादरा
दड़ीबा
टमकोर
जालोर
भीनमाल
लाडनूँ
भोपालगढ़

मेरा राजस्थान
मेड़ता सिटी
नागौर

भारत का एक राज्य राजस्थान का
एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **नागौर** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए
संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th Jun 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY
24
SHADES
CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY
Best Gift for Birthday
5X
INK QNTY
ADD Gel
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY
24
SHADES
CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY
BROAD
SUPER SOFT
DUAL TIP
BRUSH PEN
FINE
NYLON NIB
FINE NYLON NIB FROM JAPAN
WATER COLOUR EFFECT
WITHOUT USING WATER
CALLIGRAPHY
24 SHADES
DUAL TIP
BRUSH PEN
ADD Gel
CALLIGRAPHY
SUPER SOFT
BROAD
FINE NYLON NIB
FROM JAPAN
MRP
₹450/-
PER PACK
BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB
www.shop.addpens.com
Make in India

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598